



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 311]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, मई 28, 2009/ज्येष्ठ 7, 1931

No. 311]

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 28, 2009/JYAISTHA 7, 1931

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(रक्षोपाय, सीमा-शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 मई, 2009

विषय : भारत में धैलिक एनहाइडाइड के आयातों के बारे में रक्षोपाय जांच—अंतिम निष्कर्ष ।

सा.का.नि. 366(अ).—सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा-शुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण), नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए ।

क. प्रक्रिया

1. भारत में धैलिक एनहाइडाइड के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने की माँग करते हुए (1) तिरुमलाई कैमिकल्स लि., रानीपेट, तमिलनाडु, (2) मै. आई जी पेट्रोकेमिकल्स लि., रायगढ़, महाराष्ट्र, (3) मै. मैसूर टेक्नोकैमिकल्स लि., रायचूर, कर्नाटक; तथा (4) मै. एस. आई. ग्रुप इंडिया लि., नवी मुम्बई, महाराष्ट्र द्वारा सीमा-शुल्क (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 (जिसे एतदपरचात् “रक्षोपाय नियम” कहा गया है) के नियम 5 के अंतर्गत एक आवेदन दायर किया गया था जिसमें यह आरोप लगाया गया था कि धैलिक एनहाइडाइड के संवर्धित आयातों के कारण भारत में घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हो रही है और/अथवा गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। इस बात के प्रति संतुष्ट होकर कि नियम 5 की अपेक्षाएं पूरी हो गई हैं, धैलिक एनहाइडाइड के आयातों के संबंध में रक्षोपाय जांच 28 नवम्बर, 2008 की जांच शुरुआत की सूचना द्वारा शुरू की गई थी जिसे उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।
2. नई दिल्ली स्थित दूतावासों के जरिए प्रमुख निर्यातक देशों की सरकारों को सूचना की एक प्रति भेजी गई थी। जांच शुरुआत संबंधी सूचना की एक प्रति निम्नलिखित सूची के अनुसार समस्त ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को भी भेजी गई थी।

घरेलू उत्पादक

- क. मै. तिरुमलाई कैमिकल्स लि., रानीपेट, तमिलनाडु,
- ख. मै. एस. आई. ग्रुप इंडिया लि., नवी मुम्बई, महाराष्ट्र,
- ग. मै. आई. जी. पेट्रोकेमिकल्स लि., रायगढ़, महाराष्ट्र,
- घ. मै. मैसूर टेक्नोकैमिकल्स लि., रायपुर, कर्नाटक ।

आयातक

- क. क्रे वेली रेजिन्स इंडिया लि., प्लॉट सं. डी-43, ट्रांस थाणे क्रिक, एमआईडीसी इंड. एरिया, शिरवाने, नवी मुम्बई-410833, महाराष्ट्र
- ख. गुडलैस नैरोलेक पेंट्स लि., तिरुपोर रोड, पेरुगुडी, चेन्नई-600096, तमिलनाडु
- ग. गार्गी इंडस्ट्रीज (प्रोप: गार्गी कैम. प्रा. लि.) यूनिट नं. 11, डी-161, आईटीसी इंड. एरिया (एमआईडीसी), थाणे-बेलापुर रोड के सामने, जिला-थाणे, नवी मुम्बई ।

- घ. हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लि. (भारत सरकार का उद्यम) पीओ-रासायनी, जिला-रायगढ़, रासायनी, महाराष्ट्र
- ड. कैमरॉक इंड. एंड एक्सपोर्ट्स लि. (100% ईओयू), सर्वे नं. 120/2, बड़ोदरा-हलोल एक्सप्रेस वे, गाँव असोज, बड़ोदरा, गुजरात।
- च. शालीमार पेंट्स लि., पीओ- दानेश शेख लेन, फ़ैक्स-711109
- छ. यूके पेंट्स इंडिया प्रा. लि., सूरजपुर-दादरी रोड, गाँव, देविया, जिला-गीतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश

निर्यातक

- क. एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि., अलसान, 106-3, कुरो-डॉंग, कुरो-गु-सिओल, 152-050, दक्षिण कोरिया, दूरभाष: 82/2/851-6100
- ख. एलजी पेट्रोकेमिकल, योचोन, एलजी ट्विन टावर्स, योइडो-डॉंग, योंगडेंगपो-गु, सिओल-150-721, कोरिया (आरईपी), दूरभाष: 82-2-3777-1114
- ग. पेटोविडाडा, पूर्वी जावा, मुनारा बीटीएन, 15वाँ तल, जेएल, गाजा मादा नं. 1, जकार्ता-10130, इंडोनेशिया, दूरभाष: (62-21) 633 2622, फ़ैक्स: (42-21) 634 2635
- घ. नान या प्लास्टिक्स कार्पो., मैलियाओ, नं. 201, तुंगहवा नॉर्थ रोड, ताइपेई, ताइवान, दूरभाष: 886-2-2900-9141, फ़ैक्स: 886-2-2902-1243
- ड. यूपीसी टेक्नोलॉजी कार्पो., लिनयुआन एंड ताइपेई, 5एफ, 20, लेन 478 रूइगांग रोड, निहु, ताइपेई, ताइवान, दूरभाष: 886-2-26575555, फ़ैक्स: 886-2-26270707

निर्यातक देश

- क. कोरिया गणराज्य, नई दिल्ली में अपने दूतावास के द्वारा
- ख. पाकिस्तान, नई दिल्ली में अपने दूतावास के द्वारा
- ग. ताइवान, नई दिल्ली में अपने दूतावास के द्वारा
- घ. इंडोनेशिया, नई दिल्ली में अपने दूतावास के द्वारा
- ड. इजराइल, नई दिल्ली में अपने दूतावास के द्वारा

3. समस्त ज्ञात घरेलू उत्पादकों तथा आयातकों एवं निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भी उसी दिन भेजी गई थीं और उनसे 30 दिन के भीतर अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था।

4. निम्नलिखित पार्टियों से हितबद्ध पार्टियों के रूप में विचार किए जाने का अनुरोध प्राप्त हुआ था और समस्त अनुरोधों को स्वीकार किया गया था :

- क. मै. निमिर कैमिकल्स, 51-एन इंडस्ट्रियल एरिया, गुलबर्ग II, लाहौर, पाकिस्तान
- ख. इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैन्यू. एसोसिएशन, नई दिल्ली
- ग. विदेश एवं व्यापार मंत्रालय, कोरिया गणराज्य

5. अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय सीमा बढ़ाने का अनुरोध निम्नलिखित पार्टियों ने किया था :

- क. मै. निमिर कैमिकल्स, 51-एन इंडस्ट्रियल एरिया, गुलबर्ग II, लाहौर, पाकिस्तान
- ख. इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैन्यू. एसोसिएशन, नई दिल्ली
- ग. विदेश एवं व्यापार मंत्रालय, कोरिया गणराज्य

- घ. मै. पीटी पेट्रोविडाडा, पूर्वी जावा, इंडोनेशिया
 ड. एकयुंग पेट्रोकेमिकल कं. लि., दक्षिण कोरिया

6. निर्धारित अवधि के भीतर जांच पूरी करने की समय-सीमा को ध्यान में रखने के बाद समय-विस्तार के अनुरोध की अनुमति दी गई थी और संबंधित पार्टियों को तदनुसार सूचित किया गया था।

7. जांच शीघ्र पूरी करने के बाद प्रारंभिक जांच परिणाम 01 जनवरी, 2009 को जारी किए गए थे। अंतिम शुल्क 29 जनवरी, 2009 की सी.शु. अधिसूचना सं. 9/2009-सी.शु. के तहत 29 जनवरी, 2009 से लागू किया गया था।

8. दिनांक 25 फरवरी, 2009 को सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की गई थी जिसकी सूचना 16 जनवरी, 2009 को भेजी गई थी। जिन पार्टियों ने सार्वजनिक सुनवाई में भाग लिया था, उन सभी हितबद्ध पार्टियों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों के लिखित अनुरोध प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। एक हितबद्ध पार्टी द्वारा दायर लिखित अनुरोध की प्रति अन्य सभी हितबद्ध पार्टियों को उपलब्ध कराई गई थी। हितबद्ध पार्टियों को अन्य हितबद्ध पार्टियों के लिखित अनुरोधों पर उत्तर, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया गया था। हितबद्ध पार्टियों द्वारा लिखित अनुरोधों के रूप में या उत्तरों के रूप में व्यक्त समस्त विचारों की जांच की गई थी और उन्हें उचित निर्धारण करते समय ध्यान में रखा गया है।

9. घरेलू उत्पादकों द्वारा अपने उत्पादन, बिक्री, लागत एवं कीमत, लाभ तथा क्षति के अन्य मापदण्डों के बारे में प्रस्तुत सूचना का घरेलू उत्पादकों के संयंत्रों में मौके पर जाकर सत्यापन आवश्यक समझी गई सीमा तक किया गया था। सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल में रखा गया है।

ख. भारत में पीएएन के घरेलू उत्पादकों के विचार

10. घरेलू उत्पादकों ने निम्नानुसार बताया है :

क. रक्षोपाय शुल्क नियम के नियम 11(1) के साथ पठित अनुच्छेद 2.1 में यह उपबंध है कि किसी उत्पाद के आयातों पर रक्षोपाय लागू करने की इच्छा रखने वाले किसी सदस्य देश को यह निर्धारित करना चाहिए कि क्या (क) उत्पाद के आयातों में समग्र रूप में या घरेलू उत्पादन की तुलना में वृद्धि हुई है; (ख) ऐसी वृद्धि से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हो गया है; और (ग) घरेलू उद्योग समान या प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी उत्पादों का उत्पादन करता है। गैट 1994 के अनुच्छेद XIX : 1 के अंतर्गत किसी सदस्य को यह भी निर्धारित करना चाहिए कि आयातों में इस प्रकार की वृद्धि अप्रत्याशित घटनाक्रमों के कारण हुई है और गैट के अंतर्गत भारत को प्राप्त दायित्वों पर प्रभाव पड़ा है।

ख. इस बात का खण्डन नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीएएन (विचाराधीन उत्पाद) भारत में आयातित उत्पाद के समान है।

ग. आयातों की मात्रा में समग्र रूप में और तुलनात्मक रूप में हाल ही में अचानक, पर्याप्त और तेजी से वृद्धि हुई है। वर्ष 2005-06 के दौरान आयात 24092 मी. टन के हुए थे। वर्ष 2006-07

में यह घटकर 14133 मी. टन हो गए। तत्पश्चात् वर्ष 2007-08 के दौरान ये बढ़कर 31,203 मी. टन के हो गए जिनमें एक ही वर्ष में 121% की वृद्धि दर्ज की गई। ये वर्ष 2005-06 के स्तर से भी काफी अधिक हो गए। वर्ष 2005-06 की तुलना में वर्ष 2007-08 के दौरान वृद्धि 30% हुई थी। इस प्रकार, वर्ष 2006-07 के दौरान गिरावट के बावजूद वर्ष 2007-08 में आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई। वर्ष 2006-07 के दौरान आयातों में गिरावट केवल अस्थायी थी और आयात मात्रा में उसके बाद तेजी से वृद्धि हुई। वर्ष 2007-08 में इस प्रकार की अत्यंत वृद्धि होने के अलावा आयातों में वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान आगे और वृद्धि हुई। वर्ष 2008-09 (प्रथम नौ माह में ही) आयात बढ़कर 29670 मी. टन के हो गए जिनमें 27% की वृद्धि हुई। घरेलू उत्पादन के % के रूप में आयात वर्ष 2005-06 में 14% से बढ़कर वर्ष 2008-09 में 22% हो गए। घरेलू बिक्री हेतु उत्पादन के % के रूप में आयात वर्ष 2005-06 में 23% से बढ़कर वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में 33% हो गए।

घ. कोरिया में घरेलू बाजार में विकृति आने और चीन तथा अमरीका जैसे पारंपरिक बाजारों के ढहने तथा जमा हुए स्टॉक को उठाने के लिए परिणामी दिक्कत के कारण कोरिया से आयातों में अचानक वृद्धि हुई थी। इसके अलावा, कोरियाई वान का मूल्य घटकर लगभग 41% हो गया जो जनवरी, 2008 में 941 कोरियाई वान प्रति अम. डा. से घटकर अक्टूबर, 2008 में 1326 कोरियाई वान प्रति अम. डा. हो गया। कोरियाई वान का मूल्य इस प्रकार से अत्यधिक कम होने के परिणामस्वरूप कोरियाई उत्पादकों के लिए उच्च निर्यात आय का सृजन हुआ और उसने अपनी कीमत कम करने के लिए प्रोत्साहन का काम किया।

ड. घरेलू उत्पादकों की उत्पादन मात्रा वर्ष 2005-05 में 168,578 से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 201,108 मी. टन और वर्ष 2007-08 में आगे और बढ़कर 220,168 मी. टन हो गई। तथापि, पिछले तीन वर्षों में इस प्रकार की सतत वृद्धि होने के बावजूद वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान उत्पादन की मात्रा घटकर 134,773 मी. टन हो गई। सूचीबद्ध नगों के संबंध में घरेलू उत्पादकों के उत्पादन की मात्रा वर्ष 2005-06 में 100 सूचीबद्ध इकाइयों से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 119 हो गई जो आगे और बढ़कर 131 हो गई परंतु वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में घटकर 80 सूचीबद्ध इकाइयों हो गई। वर्ष 2008-09 के दौरान वर्ष की प्रथम छमाही में उत्पादन में 8% की कमी हुई। तीसरी तिमाही के दौरान इसमें 40% की गिरावट आई और वर्ष की दूसरी छमाही में इसके घटकर 71% होने की संभावना है। उत्पादन की मात्रा में इस प्रकार की अत्यधिक गिरावट घरेलू उद्योग के लिए अप्रत्याशित है जिससे शुरूआती अवधि में इसे गंभीर क्षति होने का संकेत मिलता है। घरेलू उद्योग ने क्षमता उपयोग में तेजी से गिरावट अनुभव की थी। स्थापित क्षमता में वृद्धि के बावजूद पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में उत्पादन में 18% की गिरावट आएगी जिससे 68% का अति अल्प क्षमता उपयोग होगा।

च. वर्ष 2005-06 में घरेलू बिक्री 104596 मी. टन से बढ़कर 2006-07 में 130895 मी. टन तथा वर्ष 2007-08 में आगे और बढ़कर 140272 मी. टन हो गई। तथापि, वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान यह घटकर 96181 मी. टन हो गई। सूचीबद्ध नगों के संबंध में घरेलू बिक्री मात्रा वर्ष 2005-06 में 100 सूचीबद्ध इकाइयों के स्तर से लगातार बढ़ती हुई वर्ष 2006-07 में 125 तथा 2007-08 में आगे और बढ़कर 134 इकाइयों हो गई किंतु वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान यह अत्यधिक घटकर 92 सूचीबद्ध इकाइयों हो गई।

छ. वर्ष 2006-07 के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 90% था। संवर्धित आयातों के कारण यह वर्ष 2007-08 के दौरान घटकर 82% हो गया। वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में यह आगे और घटकर 76% हो गया।

ज. बिक्री एवं घरेलू हिस्से में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग अपने संयंत्र बंद करने के लिए बाध्य हुआ। बंद किए गए संयंत्रों का ब्यौरा निम्नानुसार है :

घरेलू उत्पादक	बंद होने की तारीख	बंद हुई क्षमता
तिरुमलाई कैमिकल्स	8 अक्टूबर, 08	132500
एसआई ग्रुप	11 अक्टूबर, 08	11000
आईजी पेट्रोकेमिकल्स	25 अक्टूबर, 08	50000 (110000 में से)
मैसूर पेट्रोकेमिकल्स	1 नवम्बर, 08	12000

झ. बाद में संयंत्रों ने अपना प्रचालन पुनः शुरू कर दिया। तथापि, उनके द्वारा अब तक आयातों में अचानक वृद्धि शुरू होने से पूर्व प्राप्त सामान्य क्षमता उपयोग के स्तर पर प्रचालन नहीं किया जा रहा था।

ट. संयंत्रों के बंद होने से कई कर्मचारी (लगभग 700) बेकार हो गए हैं।

ठ. घरेलू कीमतें या आयात कीमतें एक जैसी रही हैं क्योंकि आयात कीमतों से घरेलू बिक्री कीमतों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है और घरेलू उत्पादकों को “आयात समतुल्य सिद्धांत” के आधार पर अपनी कीमतें तय करनी पड़ी थीं। वर्ष 2005-06 के दौरान घाटे की स्थिति से घरेलू उद्योग वर्ष 2006-2007 में ही उबरता था। इसने वर्ष 2006-07 और 2007-08 में पर्याप्त लाभ कमाया। तथापि, संवर्धित आयातों के कारण वर्ष 2007-08 में लाभ 213.72 सूचीबद्ध इकाइयों के स्तर से घट गया और घरेलू उद्योग ने वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान 235.87 सूचीबद्ध इकाइयों का घाटा उठाया। संपूर्ण वर्ष के लिए यह घाटा और अधिक होगा। प्रति इकाई आधार पर घरेलू उद्योग ने वर्ष 2007-08 के दौरान 244.08 सूचीबद्ध इकाइयों का लाभ कमाया। वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में इसने 775.24 सूचीबद्ध इकाइयों का घाटा उठाया। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही थी और जब तक निवारक उपाय लागू नहीं किए जाएंगे, घरेलू उद्योग का घाटा जारी रहेगा।

ड. उपर्युक्त विभिन्न आर्थिक मापदण्डों पर प्रतिकूल प्रभाव से यह पता चला कि घरेलू उद्योग की स्थिति में समग्र रूप से अत्यधिक विकृति आई है।

ढ. पीएन के आयातों में तेजी से हुई वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से और बिक्री का नुकसान हुआ है। चालू वर्ष में आयातों का पहुँच मूल्य काफी कम होने के कारण अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हुई है जिससे घरेलू उद्योग को भारी घाटा हुआ है। यदि आयातों में वृद्धि नहीं हुई होती तो वैसा अन्य कोई कारक नहीं होता जिससे घरेलू उत्पादकों को कोई क्षति हुई होती।

11. घरेलू उत्पादकों ने विस्तृत पुनर्समायोजन योजना भी प्रस्तुत की। उनके अनुसार, कच्ची सामग्री में किए गए सीमित मूल्यवर्धन पर विचार करते हुए इस उद्योग में लागत में अत्यधिक कमी की गुंजाइश नहीं बचती है। अतः उनकी पुनर्समायोजन योजना का प्राथमिक उद्देश्य तीन वर्ष की अवधि में संभव सीमा तक परिवर्तन लागत को कम करना था। यद्यपि कच्ची सामग्री की लागत को कम करने के उपायों का भी संकेत दिया गया था। घरेलू उद्योग ने यह आश्वासन दिया है कि वह पुनर्समायोजन योजना के कार्यान्वयन द्वारा तीन वर्ष की सनय-सीमा में स्वयं आयात प्रतिस्पर्धा का सामना करने की स्थिति में आ जाएगा।

ग. कैमिकल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के विचार

12. कैमिकल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. अंतर्राष्ट्रीय बाजार में रसायन की कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है और परिणामतः वैश्विक संकट के कारण भारतीय बाजार में इन वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आई है। पीएन की कीमतें जुलाई-अगस्त, 08 में 1,600 अम. डा./टन से घटकर अक्टूबर, 08 में 600 अम. डा./टन हो गई।

ख. भारतीय रसायन क्षेत्र कम माँग, बड़े पैमाने पर ऑर्डर के निस्सन, अत्यधिक मालसूची और स्टॉकगत घाटे का सामना कर रहा है।

ग. उपर्युक्त कारणों से लगभग सभी मध्यम एवं लघु कंपनियों अपने प्रभालन बनाए रखना कठिन समझती हैं और वे संयंत्र बंद करने के लिए बाध्य हुई हैं। यह क्षेत्र कई लोगों को रोजगार देता है, बड़े निर्यात आधार के साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पर्याप्त योगदान करता है और यह अन्य कई क्षेत्रों का आधार भी है।

घ. उन्होंने चार वर्ष की अवधि के लिए पीएन के आयातों पर स्तोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया है क्योंकि रसायन उद्योग अब तक के सबसे खराब दौर से गुजर रहा है।

घ. निर्यातक देश की सरकारों तथा निर्यातकों के विचार

13. विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त विचारों का संक्षेप निम्नानुसार है :

घ.1 विदेश व्यापार प्रशासन, इजरायल राज्य के विचार

14. इजरायल सरकार के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. आवेदन की प्रति इजरायली प्राधिकारियों या गाडिव- जो इजरायल का एक निर्यातक है, को उपलब्ध नहीं कराई गई थी। 20 फरवरी, 2009 को ही आवेदन की एक प्रति गाडिव को उनके विधिक प्रतिनिधि के अनुरोध पर उपलब्ध कराई गई थी। यद्यपि भारत ने 16 दिसंबर, 2008 को स्तोपाय समिति को अधिसूचित किया था। तथापि, प्रक्रिया से संबंधित कोई अधिसूचना जनवरी, 2009 के मध्य तक इजरायली प्राधिकारियों को उपलब्ध नहीं कराई गई थी। इजरायल ने सार्वजनिक सुनवाई के बारे में सूचना प्राप्त की थी किन्तु गाडिव को वह नहीं मिली थी।

ख. यद्यपि आयातों में वर्ष 2008 की प्रथम छमाही में समग्र रूप में वृद्धि हुई है तथापि इसे मामूली वृद्धि माना जाना चाहिए। वार्षिक आँकड़ों में यह वृद्धि लगभग 31.5 केटीपीए से बढ़कर 45 केटीपीए के आसपास रही है। यह भारतीय विनिर्माताओं की क्षमता का केवल 5.5% बनती है। गाडिव ने भारत को अपने आयातों में वृद्धि नहीं की।

ग. वर्ष 2004-05 से 2008-09 तक की अवधि के दौरान आयात मात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए हैं। वर्ष 2004-05 को आधार वर्ष के रूप में लेते हुए आयात वर्ष 2005-06 में बढ़कर 24,092 मी. टन के हो गए और उसके बाद वर्ष 2006-07 में घटकर 14,133 मी. टन तथा वर्ष 2007-08 में आगे और बढ़कर 31,441 मी. टन और वर्ष 2008-09 के प्रथम 5 माह में 18,655 मी. टन के स्तर पर पहुँच गए। जाँच में इन आंकड़ों पर विधिवत् ध्यान नहीं दिया गया है और स्लोपाय करार के अनुच्छेद 2 तथा गैट के अनुच्छेद XIX:1 और भारतीय सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद 8ख(1) में की गई अपेक्षा के अनुसार स्लोपाय शुल्क लगाने के इस दावे की पुष्टि करना असंभव है कि स्लोपाय शुल्क लगाने के लिए आयातों “की मात्रा में वृद्धि” हुई है।

घ. वर्ष 2008-09 की प्रथम छमाही के लिए पीएएन के आयात में तेजी से गिरावट अर्थात् 50% की गिरावट आई है जिसकी दर लगभग 11.2 केटी रही है जो वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही में घटकर 5.7 केटी हो गई है। सर्वाधिक संगत और हाल के आंकड़ों से आयात मात्रा में गिरावट प्रदर्शित होती है जो इस बात का सबूत है कि जांच के मूलभूत परिणाम विरोधामासी हैं।

ङ. समूचे विश्व में इस उद्योग के विनिर्माताओं को हुई क्षति का एक बड़ा भाग अक्टूबर तथा नवम्बर 2008 में स्टॉक के अवमूल्यन के कारण हुई है। ऐसा ओएक्स एवं पीएएन की कीमतों में भारी कमी के कारण हुआ था। ओएक्स की 20,000 मी. टन की स्टॉक क्षमता से एक माह से भी कम खपत का पता चलता है। जो कि पारंपरिक प्रचालन स्टॉक है।

च. आयातों की तुलना में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कोई नाटकीय गिरावट नहीं आई थी जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि संवर्धित आयातों से गंभीर क्षति हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग को वर्ष 2008-09 में निर्यात बिक्री में अत्यधिक नुकसान हुआ है।

छ. भारतीय पीएएन उत्पादकों की वास्तविक कठिनाइयाँ निर्यात बाजार में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण उत्पन्न हुई थी। ये कठिनाइयाँ वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण उत्पन्न हुई मानी जानी चाहिए न कि भारत में आयात पद्धति में परिवर्तनों के कारण।

ज. गैट के अनुच्छेद XIX, स्लोपाय करार के अनुच्छेद 2 और भारतीय सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद 8ख(1) में यह अपेक्षित है कि आयात किया जा रहा कोई उत्पाद “इतनी अधिक बढ़ी हुई मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों में होना चाहिए जिससे कि घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई हो या उसका खतरा उत्पन्न हो गया हो”। इस दूसरी अपेक्षा में स्पष्ट तौर पर संवर्धित मात्राओं से भिन्न उन “स्थितियों” का उल्लेख है जिनका वर्णन प्रथम अपेक्षा में किया गया है। हम प्रारंभिक जांच परिणामों में ऐसा कोई जांच परिणाम प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

15. इजरायल की सरकार ने यह अनुरोध किया है कि गाडिव और इजरायली सरकार को स्लोपाय शुल्क लगाने के बारे में कोई निर्णय लेने से पूर्व अपने निर्यात हितों की रक्षा हेतु पूर्ण अवसर प्रदान किया जाए।

घ.2 मै. गाडिव पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज लि., इजरायल के विचार

16. मै. गाडिव पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज लि., इजरायल के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. कोई “संवर्धित आयात” नहीं हुआ था बल्कि बड़ी घरेलू उत्पादन क्षमता की तुलना में आयातों में मामूली वृद्धि हुई थी।

ख. लाभप्रदता में कमी के कारण संयंत्रों को अस्थायी रूप से बंद करना और उत्पादन में कटौती करना इस उद्योग की सुविचारित पद्धति रही है। खासकर इसी नाजुक क्षेत्र में विश्व भर के पीएन उत्पादकों द्वारा संयंत्र स्थायी रूप से बंद किए जा रहे थे और उत्पादन में कटौती की जा रही थी। विश्व भर के पीएन उत्पादक एक कठिन दौर से गुजर रहे थे क्योंकि ओएक्स की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई थी और इस प्रकार, उत्पादकों की लाभप्रदता प्रतिकूलतः प्रभावित हो रही थी। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है। नवंबर, 2008 में पीएन की कीमतों में तेजी से गिरावट आने के कारण विश्व भर के अन्य पीएन संयंत्र बंद कर दिए गए थे या फिर उनके क्षमता उपयोग में भारी कटौती की गई थी। गाडिव की जानकारी के अनुसार तुर्की, स्पेन और रोमानिया में वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही के दौरान दो से तीन माह की अवधि तक पीएन संयंत्र बंद किए गए थे।

ग. कोई अप्रत्याशित परिस्थिति नहीं दर्शाई गई है। पीएन बाजार में ये घटनाक्रम आम रहते हैं और ये कीमतों में उतार-चढ़ाव के सामान्य आर्थिक व्यापार चक्र एवं वृहद आर्थिक मंदी की अवधि के एक भाग हैं।

घ. जाँच में यह नहीं प्रदर्शित किया गया है कि आयात की ऐसी कौन-सी स्थितियाँ हैं जिनमें गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हुआ है। आयात की कीमत और अन्य संगत बिक्री शर्तों के विश्लेषण से इस निष्कर्ष को समर्थन नहीं मिलता है कि आयातों के कारण ही घरेलू उद्योग को परेशानी हुई है। आयात में आरोपित वृद्धि तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध मौजूद नहीं है।

ड. रक्षोपाय करार में यह अपेक्षित है कि आयातों में वृद्धि हाल ही में, अचानक, तेजी से और अत्यधिक होनी चाहिए। तथापि, आयातों में वृद्धि गाडिव द्वारा की गई गणना के आधार पर भारतीय घरेलू विनिर्माताओं की कुल क्षमता की केवल 5.5% या 2.15% बनती है।

च. तुर्की पीएन का जरूरत के आधार पर एक बड़ा आयातक था (इसकी खपत स्थानीय उत्पादन क्षमता की तुलना में दोगुनी से अधिक है) और इसके बावजूद उन्होंने वर्ष 2008-09 की प्रथम तिमाही में पीएन विनिर्माण क्षमताएँ बंद की थीं। तथापि समस्त भारतीय संयंत्रों ने अर्न्तम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से पूर्व ही विनिर्माण शुरू कर दिया था।

छ. भारत का उद्योग पीएन का जरूरत के आधार पर पारंपरिक निर्यातक रहा है और वास्तविक निष्कर्ष से यह पता चलता है कि कठिनाइयाँ उसके निर्यात बाजार में बिक्री बढ़ने के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसके साथ-साथ वैश्विक मंदी और स्टॉक के अवमूल्यन जैसे उसके अन्य प्रभाव उन कठिनाइयों के कारण हैं जिनके बारे में घरेलू उद्योग को नुकसान पहुँचाने का दावा किया गया है। वर्ष 2008-09 की प्रथम छमाही के आँकड़ों से आयातों में 29% कमी का पता चला। बाजार में एकाधिकार रखने की मंशा के साथ-साथ निर्यात में गिरावट और बाजार में अपनी शर्त चलाने के कारण घरेलू उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय रूप से अपनी 70.5% क्षमता को निष्क्रिय रखना पड़ा जबकि आयातों में 5% की मामूली वृद्धि हुई।

ज. प्रारंभिक जाँच परिणामों में किए गए उल्लेख के अनुसार जो स्टॉक जमा हुआ है वह इस उद्योग के लिए आम है। कच्ची सामग्री का स्टॉक अर्थात् 20,000 मी. टन ओएक्स से स्थानीय

उद्योग द्वारा एक माह से कम खपत की मात्रा का पता चलता है। तैयार उत्पाद के स्टॉक अर्थात् 9,500 मी. टन पीएएन से 2 सप्ताह से कम की बिक्री मात्रा का पता चलता है। इन्हें मेट्रोस्टाइन उद्योग में सामान्य एवं पारंपरिक प्रचालनात्मक स्टॉक माना जाता है।

झ. गाडिव ने भारतीय उत्पादकों की कीमतों में कटौती नहीं की क्योंकि पीएएन के अधिकांश निर्यात भारत में कच्ची सामग्री की कीमत जमा प्रीमियम के आधार पर ठेकों के तहत किया गया था जिसमें विनिर्माण लागत और उचित लाभ शामिल थे।

ट. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समायोजन योजना तथ्यरहित और अति सामान्य योजना है जिसमें संवर्धित कार्यक्षमता अथवा किसी “अन्य समायोजन” या प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने के वास्तविक पर्याप्त उपाय शामिल नहीं हैं।

ठ. गाडिव के आयातों को अलग रखा जाना चाहिए क्योंकि भारत को हुए गाडिव के निर्यातों और घरेलू उद्योग को हुई किसी गंभीर क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। भारत को पीएएन के अन्य निर्यातकों की तुलना में भारत को गाडिव की बिक्री की भिन्न-भिन्न शर्तों को ध्यान में रखते हुए गाडिव की बिक्री को अलग प्रकार का व्यवहार प्रदान करना रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.2 का उल्लंघन नहीं है। इसका समर्थन अमरीका-लाइन पाइप रक्षोपाय मामले में डब्ल्यूटीओ के अपीलीय निकाय के जांच परिणामों द्वारा भी होता है जिसमें यह निर्णय दिया गया था कि यदि अमरीका ने यह प्रदर्शित करने का पर्याप्त साक्ष्य दिया है कि मैक्सिको तथा कनाडा से इतर देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है, इन दोनों देशों से हुए आयातों को रक्षोपाय लागू करने के दायरे में नहीं लाया जा सकता।

ड. जिन अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, उन पर भी प्रारंभिक जांच परिणामों में विचार नहीं किया गया था।

ढ. भारतीय पीएएन विनिर्माताओं को रक्षोपाय शुल्क लागू करने से मदद मिल सकती है परंतु इससे मुख्यतः पीएएन का आयात करने वाले अन्य भारतीय उद्योगों को क्षति होगी और इससे उत्पादों के अंतिम प्रयोक्ताओं को भी क्षति पहुँचेगी। इससे भारतीय निर्यातकों को भी क्षति हो सकती है क्योंकि इससे अन्य देशों द्वारा प्रतिउपाय लागू किए जा सकते हैं।

ण. रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 5 में यह अपेक्षित है कि किया गया कोई उपाय ऐसा होगा जिसे स्थानीय उद्योग को हुई क्षति की भरपाई हेतु जरूरी माना जाएगा। चूँकि पीएएन निर्माताओं का लाभ मार्जिन स्पष्ट तौर पर 25% से कम था इसलिए 25% के रक्षोपाय से भारत में पीएएन के आयात पूर्णतः समाप्त हो जाएँगे और यह रक्षोपाय लागू करने के उद्देश्य के प्रतिकूल होगा।

घ.3 पाकिस्तान सरकार के विचार

17. पाकिस्तान सरकार के विचार संक्षेप में निम्नानुसार है :

क. आयातों में वृद्धि इतनी मामूली हुई है जिससे घरेलू उद्योग को “गंभीर क्षति” नहीं हो सकती है। इसके अलावा, संवर्धित आयात “हाल ही में पर्याप्त”, “अचानक पर्याप्त” और “काफी अधिक” की कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं जैसा कि “यूएसए व्हीट ग्लुटेन सेफगाइर्स” के मामले में पैनल ने निर्धारित किया है।

ख. जॉय की शुरुआत अवास्तविक अनुमानों, आयात के इस अनुमान पर आधारित है कि आयातों में कथित वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग को बंद होना पड़ा है। पीएएन का उत्पादन करने वाली भारतीय विनिर्माता इकाइयों द्वारा अब अपना उत्पादन पुनः शुरू कर दिया है और उन्होंने घरेलू बाजार में माल उतारना शुरू कर दिया है तथा अपने उत्पादन का निर्यात भी किया जा रहा है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को हो रही गंभीर क्षति का तर्क स्वीकार्य नहीं था।

ग. माँग में कमी आयातों में हुई वृद्धि से अधिक रही है। अतः क्षति संवर्धित आयातों के कारण नहीं हो सकती है।

घ. पाकिस्तान से हुए आयात कुल आयातों के केवल 0% से 8% और घरेलू उत्पादन के 0% से 1% बनते हैं और पाकिस्तान से आयातों की ऐसी नगण्य मात्रा से भारतीय घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति नहीं हो सकती है।

ङ. उत्पाद पीएएन कच्चे पेट्रोलियम का अनुषंगी उत्पाद है। कच्चे पेट्रोलियम के कीमतों में परिवर्तनों से संबद्ध उत्पाद की कीमत प्रभावित हो सकती है और यह सुविख्यात तथ्य है कि कच्चे तेल की कीमतों में जुलाई, 2008 से गिरावट आई है। ऐसी स्थिति में कोई आयात न होने पर भी भारतीय उद्योग को क्षति होगी। अतः घरेलू उद्योग को पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में गिरावट के कारण क्षति हुई है।

च. घरेलू उद्योग को क्षति शुल्क को 20% से घटाकर 7.5% करने, माँग में वैश्विक कमी और पीएएन तथा आर्थोक्सिलिन की कीमत में कमी के कारण हुई है।

छ. याचिका में दिए गए कीमत कटौती सही नहीं हैं क्योंकि आयातों के पहुँच मूल्य का सूचीबद्ध मूल्य घरेलू बिक्री कीमतों के सूचीबद्ध मूल्य के अनुरूप चलता है।

घ.4 कोरिया सरकार

18. कोरिया सरकार ने दो पहलुओं के संबंध में अपने तर्क दिए हैं :-

- i. अप्रत्याशित घटनाक्रम
- ii. कारणात्मक एवं कारणेतर संबंध

क. आर्थिक विकास में मंदी और किसी प्रकार की मंदी सामान्य आर्थिक चक्र का भाग होती है और इस प्रकार यह अप्रत्याशित घटनाक्रम नहीं होती है। तथापि, विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार दीर्घावधिक आर्थिक मंदी “अप्रत्याशित घटनाक्रम” हो सकती है।

ख. वस्तुओं सहित व्यापारित माल की कीमत में उतार-चढ़ाव अप्रत्याशित घटनाक्रम नहीं हो सकता है क्योंकि किसी व्यापारित माल की कीमत हमेशा के लिए निर्धारित नहीं की जाती है। इसके अलावा, भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने अपने इस निष्कर्ष के समर्थन में किसी पुरातन आंकड़ों के संदर्भ में यह स्पष्टीकरण नहीं दिया है कि ओएक्स या पीएएन की कीमत में अंतर “अप्रत्याशित घटनाक्रम” है।

ग. भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने इस बात के समर्थन में आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं कि कोरियाई घरेलू बाजार और चीन का निर्यात बाजार ढह गया है। कैमिकल मार्केट रिसर्च इंक से उपलब्ध सार्वजनिक सूचना के अनुसार वर्ष 2008 में कोरिया में घरेलू माँग 226,515 मी. टन की थी जो वर्ष 2007 में रही 226,901 मी. टन की माँग के लगभग बराबर है।

घ. वर्ष 2007 और 2008 के बीच कोरिया के कुल पीएन निर्यातों के प्रतिशत के रूप में चीन को पीएन के कोरियाई निर्यात लगभग 23-24% के बीच स्थिर रहे हैं।

ङ. भारत को कोरियाई निर्यातों में वर्ष 2008 में केवल 1,288 मी. टन की वृद्धि हुई जो वार्षिक आधार पर भारतीय आयातों में हुई वृद्धि अर्थात् 13,335 मी. टन के दसवें भाग से कम है।

च. मुद्रा विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में एक सामान्य प्रक्रिया है। इस प्रकार, ये पूर्वानुमेय होते हैं और ये अनुच्छेद XIX :1(क) के अर्थ के भीतर कोई “अप्रत्याशित घटनाक्रम” नहीं है।

छ. भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने उन देशों को अभिज्ञात नहीं किया है जिनमें मंदी छाई हुई है और इस बात का भी पता नहीं लगाया है कि मंदी और उसके “असामान्य” स्वरूप से भारत को पीएन के आयातों में किस प्रकार वृद्धि हुई है।

ज. भारतीय जांचकर्ता प्राधिकारी ने संवर्धित आयातों से भिन्न कारकों के क्षतिकारक प्रभावों का उचित निर्धारण नहीं किया है।

झ. भारतीय उद्योग के निर्यात बाजार और अन्य देशों में स्थित उद्योग की तुलना में भारतीय उद्योग की तुलनात्मक कुशलता के नुकसान के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

घ.5 निमिर कैमिकल्स पाकिस्तान लि., पाकिस्तान

19. निमिर कैमिकल्स पाकिस्तान लि. के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. पीएन के घरेलू उत्पादन के पूर्ण वर्ष के अनुमान वास्तविक अनुमानों पर आधारित हैं। आवेदकों ने वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही में पीएन के आयातों में 100% वृद्धि की और गैर-भागीदार उत्पादक का उत्पादन बढ़ा जबकि उन्होंने आवेदक के उत्पादन में केवल 37% वृद्धि की है।

ख. पीएन की बिक्री के लिए ग्रीष्म अत्यंत अनुकूल मौसम होता है तथा वर्ष 2008-09 के प्रथम छह माह (अप्रैल-सित.) के आयात संबंधी आंकड़े पीएन के अत्यंत अनुकूल मौसम से संबंधित हैं। इस प्रकार, यह अनुमान गलत है कि इसके द्वारा वर्ष के अंत तक इसे दोगुना कर दिया जाएगा।

ग. वित्त वर्ष 2008-09 के लिए आयातों में कुल गिरावट 67,470 मी. टन की हुई है जो आयातों में हुई वृद्धि अर्थात् 13,335 मी. टन से अधिक है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को हुई क्षति मुख्यतः आयातों में वृद्धि की बजाय माँग में गिरावट के कारण हुई है।

घ. उन्होंने यह स्वीकार किया है कि कुछ महीनों में पीएन का बाजार तेजी से ढहा है और भारतीय आवेदक ही कीमतों में गिरावट के अकेले शिकार नहीं हुए हैं। विश्व भर में प्रत्येक व्यक्ति इस कारक से प्रभावित हुआ था। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में तेजी से और अचानक आई गिरावट के कारण काफी धन भी गँवाया है।

घ.6 इंडोनेशिया सरकार

20. इंडोनेशिया सरकार के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. कोरिया में घरेलू बाजार के ढहने और चीन एवं अमरीका जैसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार के ढहने के साथ-साथ दक्षिण कोरियाई बैंकिंग उद्योग के संकट और इसकी तुलना में कोरियाई वान के अवमूल्यन से पीएन के आयातों से संबंधित रक्षोपाय जांच की शुरुआत को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता।

ख. इस रक्षोपाय जांच की शुरुआत से जापान, जर्मनी, इटली, चीन, सिंगापुर, थाइलैंड, तुर्की तथा अमरीका को अलग रखा गया है। तथापि, रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2 के पैरा 2 में यह निर्धारित है कि रक्षोपाय ऐसे किसी उत्पाद पर लागू होंगे जिसे आयात किया जा रहा है भले ही उसका स्रोत कोई भी हो।

ग. रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2 के पैरा 1 के अनुसार कोई सदस्य उस स्थिति में ही रक्षोपाय शुल्क के लिए आवेदन कर सकता है यदि इस प्रकार के उत्पाद का आयात ऐसी संवर्धित मात्रा में समग्र रूप में या घरेलू उत्पादन की तुलना में उक्त क्षेत्र में किया जा रहा हो। वर्ष 2000-2005 के दौरान पीएन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लागू रहने की स्थिति में पीएन में समग्र रूप में या तुलनात्मक रूप में भारी वृद्धि होने की संभावना नहीं है।

घ. आयातित पीएन का प्रतिशत घरेलू उत्पादन की तुलना में नगण्य है।

ड. घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग वर्ष 2005-06 में 77% से बढ़कर 2006-07 में 86% और 2007-08 में 91% हो गया है। अतः घरेलू उद्योग को कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है।

च. घरेलू उद्योग को कोई गंभीर क्षति नहीं हो रही है क्योंकि इसके उत्पादन वर्ष 2005-06 में 191,636 मी. टन से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 222,959 मी. टन हो गया और यह वर्ष 2007-08 में लगातार बढ़ते हुए 244,429 मी. टन हो गया।

छ. घरेलू संयंत्रों को बंद करना विरोधाभासी कथन है क्योंकि घरेलू उत्पादन में वृद्धि हो रही है और अधिकांश संयंत्र बंद हो जाने पर उत्पादन में वृद्धि होना संभव नहीं है।

ज. वर्ष 2005-06 के दौरान भारत के पाटनरोधी प्राधिकारी ने इंडोनेशिया के मूल के आयातित पीएन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया था। यह सुविज्ञात तथ्य है कि पाटनरोधी शुल्क एक ऐसा उपाय है जिसका उद्देश्य घरेलू उद्योग को पाटन की पद्धति से हुई क्षति को समाप्त करना है। घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से हुई क्षति की भरपाई हो जानी चाहिए थी। अतः भारत के घरेलू पीएन उद्योग द्वारा प्रस्तुत रक्षोपाय अस्वीकार्य हैं।

घ.7 पीटी पेट्रोविडाडा, इंडोनेशिया

21. पीटी पेट्रोविडाडा, इंडोनेशिया के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. पीएन की कीमत अगस्त, 2008 में बढ़कर 1500 अम. डा./मी. टन हो गई और नवम्बर 2008 में घटकर 570 अम. डा./मी. टन हो गई जो वस्तुतः कच्चे तेल की कीमत में भारी गिरावट के कारण हुआ है। अमरीका से शुरू हुई वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण कीमत में गिरावट आई है जिससे वित्तीय संकट उत्पन्न हुआ है। इसकी वजह से विश्व भर में व्यापार प्रभावित हुआ है।

ख. अल्पावधि में ओएक्स तथा पीएन की कीमतों में गिरावट के कारण एशिया में अधिकांश पीएन उत्पादकों को भारी घाटा हुआ है। इसके परिणामस्वरूप अधिकांश उत्पादकों ने अपने संयंत्र बंद कर दिए हैं। अतः याचिकाकर्ता द्वारा दावा की गई आयात मात्रा वर्ष 2008-09 के लिए वार्षिक आंकड़ों के निर्धारण के संबंध में गलत है।

ग. वर्ष 2007-08 में पीएन की घरेलू माँग में वृद्धि हुई है। चूँकि घरेलू उत्पादन घरेलू माँग के अनुरूप नहीं हो सकता इसलिए पीएन प्रयोक्ताओं ने पीएन का आयात किया है। अतः वर्ष 2007-08 में आयात में वृद्धि हुई है।

ड. आयातकों/प्रयोक्ता उद्योगों के विचार

ड.1 इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैनु. एसोसिएशन ("आईपीएम") के विचार

22. आईपीएम के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

क. याचिकाकर्ताओं ने अनसेचुरेटेड पॉलिस्टर रेजिन, सीपीसी, थैलेट प्लास्टिसाइजर्स के विनिर्माताओं तथा आईपीएम को आवेदन में हितबद्ध पार्टियाँ नहीं बनाया है।

ख. 1 टन ओएक्स से 1.13 टन पीएन का उत्पादन होता है जिससे पीएन के उत्पादन में लगभग 13% का लाभ होता है। 1 मी. टन ओएक्स की कीमत की तुलना 1.13 मी. टन पीएन की कीमत के साथ की जानी चाहिए। आवेदन में इस तथ्य पर विचार नहीं किया गया है। पीएन के उत्पादन की एकसोथर्मिक अभिक्रिया के दौरान उत्पादित अतिरिक्त वाष्प/ऊर्जा को आवेदन में छिपाया गया है जिसका या तो विपणन किया जाता है या अन्य उत्पादों में उपयोग किया जाता है।

ग. प्लास्टिसाइजर को लघु उद्योग क्षेत्र से हाल ही में अनारक्षित किए जाने के बाद पीएन के बड़े विनिर्माता इस क्षेत्र पर नजर रखे हुए थे।

घ. भारत सहित विश्व भर में कच्ची सामग्री को प्लास्टिसाइजर्स में परिवर्तन किए जाने में होने वाला मूल्यवर्धन 50 अम. डा. प्रति टन रहता है। इस प्रकार के कम मूल्यवर्धन के कारण कच्ची सामग्री की कीमत में किसी प्रकार की वृद्धि को प्रयोक्ता उद्योग द्वारा खपाना कठिन होगा। इस प्रकार, रक्षोपाय शुल्क का लगाना लोक हित के विपरीत है क्योंकि इससे प्लास्टिसाइजर उद्योग बंद हो जाएगा और परिणामतः पीएन उद्योग भी बंद हो जाएगा।

ड. आयातों में कोई खास वृद्धि नहीं हुई थी क्योंकि वर्तमान आयात वर्ष 2005-06 में हुए आयात के सामान्य स्तर पर रहे थे और ऐसा कोई अप्रत्याशित घटनाक्रम नहीं है जिससे आयातों में वृद्धि हुई हो।

च. भारत का पीएन उद्योग पीएन का जलूत के आधार पर पारंपरिक निर्यातक रहा था और वर्ष 2008 में पीएन की माँग कच्चे तेल की कीमत 150 डॉलर से घटकर 40 डॉलर होने के कारण पीएन की माँग विश्व भर में कम रही थी क्योंकि क्रंता कीमतों के स्थिर होने का इंतजार कर रहे थे । विदेशों में कम होने के कारण याचिकाकर्ताओं की निर्यात बिक्री में गिरावट आई जिससे उन्हें क्षति हुई । इस प्रकार, वर्ष 2008 की तीसरी और चौथी तिमाही के दौरान इसी प्रकार की बंदी याचिकाकर्ता कंपनी के उत्पाद विशेष के लिए विशिष्ट नहीं रही थी ।

छ. भारतीय पीएन उद्योग को क्षति वैश्विक मंदी के कारण और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के कारण हुई है जिससे प्रति व्यक्ति प्रभावित हुआ है और यह क्षति संवर्धित आयतों के कारण किसी भी रूप में नहीं हुई है ।

ज. इसके अलावा, एशियन पेंट्स, जो स्लोपाय आवेदन में शामिल नहीं हुआ था, का हिस्सा कुल स्थानीय उत्पादन का लगभग 15% बनता है और इसने आबद्ध खपत के अलावा, अपने वी-तिहाई उत्पादन की बिक्री की है । उनके पास वर्ष 2006-07 में 87% की तुलना में वर्ष 2008-09 में क्षमता उपयोग 98% रहा था ।

झ. कई कारकों से कोई क्षति प्रदर्शित नहीं हुई थी जैसा कि निम्नलिखित विवरण से पता चलता है :

- i. वर्ष 2008-09 में क्षमता उपयोग उसी स्तर पर रहा था जैसा कि वह 2005-06 में रहा था;
- ii. वर्ष 2008-09 में घरेलू उत्पादन का हिस्सा उसी स्तर पर रहा था जैसा कि वह 2005-06 में रहा था;
- iii. वर्ष 2005-06 की तुलना में वर्ष 2008-09 में घरेलू उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि देखी गई थी;
- iv. याचिकाकर्ता लगातार काम करता रहे थे;
- v. कार्यक्षेत्रों किसी समय विशेष पर बंदी नहीं रहे थे;

झ. आवेदकों ने एक दूसरे के सॉल्यूशन कर योजनाबद्ध तरीके से अक्टूबर, 2008 में अपना संयंत्र बंद किया है न कि (क) वार्षिक रख-रखाव करने और (ख) स्लोपाय आवेदन को न्यायोचित उद्देश्यों के दोहरा उद्देश्य प्राप्त करने से निम्न ऑर्डरों के अभाव के कारण ।

ड. वर्ष 2008 में पीएन का उत्पादन कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के कारण विश्व भर में कम रहा था क्योंकि क्रंता कीमतों के स्थिर होने का इंतजार कर रहे थे ।

व. वर्ष 2008-09 के दौरान पी ए एन की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में गिरावट कीमत कटौती के कारण नहीं आई, बल्कि यह ऑयल-जाइलीन की कीमतें कम होने के कारण आई थी । ऑक्सीलीन एवं पी ए एन के बीच डेल्टा संवेद सकारात्मक रहा है और यह अपरिष्कृत पदार्थ की कीमतों में घट-बढ़ के दौरान भी मौजूद रहा है ।

ड. जब अपरिष्कृत पदार्थ की कीमतें 150 अम.डॉलर से घटकर 40 अम डॉलर रह गई, तब पी ए एन सहित पेट्रोसायन आधारित उत्पादों की कीमतों में भी 50 प्रतिशत से 66 प्रतिशत की गिरावट आई । प्लास्टिसाइजर्स की कीमतों में भी तदनुसार गिरावट आई । आई पी एम ए के सदस्यों को भी

घाटा हुआ। तुलना पत्र दर्शाता है कि सितम्बर-दिसम्बर 2008 के दौरान प्रयोक्ता उद्योग को पूर्ववर्ती माह में हुए लाभ की तुलना में भारी घाटा हुआ। इससे सिद्ध होता है कि सितम्बर 2008 के बाद की अवधि न केवल याचिकाकर्ताओं के लिए बल्कि आई पी एम ए के सदस्यों सहित सभी के लिए निराशाजनक थी क्योंकि अपरिष्कृत पदार्थों की गिरती कीमतों और वैश्विक मंदी के कारण यह स्थिति निर्मित हुई थी।

द. कोरिया के घरेलू बाजार और चीन व यू एस ए के पारम्परिक निर्यात बाजार में गिरावट के अप्रत्याशित घटनाक्रम और तत्पश्चात निर्मित स्टॉक की ऑफ लोडिंग के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावे के समर्थन में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। कोरिया की बिक्री कीमतें इलाइल, ताइवान, इंडोनेशिया एवं पाकिस्तान की निर्यात कीमतों से अधिक थी।

ण. घरेलू उद्योग ने दावा किया था कि विभिन्न देशों में अभूतपूर्व असमान मंदी के कारण भारत में पी ए एन के आयातों में वृद्धि हुई। मंदी को अप्रत्याशित घटनाक्रम नहीं माना जा सकता। मंदी तो बाजारोन्मुखी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा है। मंदी केवल पी ए एन के लिए नहीं थी बल्कि इसने विश्वभर में सभी उत्पादों को अपनी चपेट में ले लिया था।

त. आयातों वृद्धि भारत की वचनबद्धताओं के कारण नहीं हुई थी। पी ए एन पर आयात शुल्क वर्ष 2002-03 में 30 प्रतिशत से काफी घटाकर 2007-08 में 7.5 प्रतिशत कर दिया गया था। यह कमी दिनांक 1.3.2007 से प्रभावी हुई थी और इसे उद्योग जगत ने समायोजित कर लिया था और सितम्बर 2008 तक कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई थी। वर्तमान समस्या इस संधि के अंतर्गत भारत की वचनबद्धता के कारण नहीं उपजी है, अतः रक्षोपाय शुल्क लागू करने का कोई मामला नहीं बनता।

थ. कोई व्यावहारिक तथा विश्वसनीय पुनर्रचना योजना प्रस्तुत नहीं की गई है। जब उनके लक्ष्य मात्र 12-13 प्रतिशत थे, वे अपनी लागत को घटाकर रक्षोपाय शुल्क तक लाने और आयातों से प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में नहीं थे।

द. 25 प्रतिशत का रक्षोपाय शुल्क लागू किया जाना अत्यंत गैर अनुपातिक था।

च. जांच एवं निष्कर्ष

23. मैंने इस मामले से संबंधित रिकॉर्ड तथा घरेलू उद्योग, प्रयोक्ताओं/आयातकों, निर्यातकों एवं निर्यातक सरकार द्वारा प्रस्तुत उत्तरों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रस्तुत निवेदनों एवं उनके संबंध में उठाए गए मुद्दों का विवेचन निम्नलिखित निष्कर्षों में यथास्थान किया गया है।

च.1 जांचाधीन उत्पाद एवं समान वस्तु अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु

24. प्राथमिक जांच परिणाम में जांचाधीन उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित किया गया था:-

"जांचाधीन उत्पाद थैलिक एनहाइड्राइड है, जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 2917.35.00 के अंतर्गत आता है।"

25. किसी भी हितबद्ध पार्टी ने जांचाधीन वस्तु के संबंध में कोई मुद्दा नहीं उठाया था। अतः इस बात की पुष्टि की जाती है कि जांचाधीन उत्पाद थैलिक एनहाइड्राइड है, जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 2917.35.00 के अंतर्गत आता है।

26. थैलिक एनहाइड्राइड (पी ए एन) थैलिक अम्ल का प्रमुख वाणिज्यिक रूप है। यह श्वेत खेदार ठोस पदार्थ है, जिसे सिंथेटिक रेजिन्स के विनिर्माण में प्रयुक्त किया जाता है जो पेन्ट उत्पादों में बाइण्डर का कार्य करता है। पी ए एन का रासायनिक सूत्र $C_8H_4O_3$ है। पी ए एन का उत्पादन वायु के साथ ओ एक्स अथवा नेफथलीन के उत्प्रेरणीय ऑक्सीकरण द्वारा किया जाता है। ओ एक्स पर्सदीदा फीडस्टॉक है। इस प्रक्रिया में ओ एक्स को एक रिएक्टर से गुजारा जाता है, जो चीनी मिट्टी की ट्यूबों अथवा पोर्सलीन के बेलनों से निर्मित होता है जिस पर उत्प्रेरक (वैनेडियम पेंटाऑक्साइड अथवा टाइटेनियम ऑक्साइड) की परत चढ़ी होती है। फीडस्टॉक ओ एक्स तथा वायु में उपस्थित ऑक्सीजन फिक्स्ड बंद कंटेनर पर परस्पर अभिक्रिया करते हैं और पी ए एन का उत्पादन होता है। इस उत्पाद की अशुद्धियां कम करने के लिए इसे एक पोस्ट रिएक्टर में पालिश किया जाता है, सब्लिमेट के रूप में ठोस रूप दिया जाता है और फिर स्विच कन्डेन्सरों में गलाया जाता है। अंत में उत्पाद की कतलियां बनाकर सफेद अथवा हल्के पीले रंग का रूप दे दिया जाता है। पी ए एन का प्राथमिक उपयोग विनाइल क्लोराइड निर्मित प्लास्टिक के उत्पादन में रासायनिक मध्यवर्ती पदार्थ के रूप में किया जाता है। थैलेट ईस्टर्स, जो प्लास्टिसाइजर्स का कार्य करते हैं, पी ए एन से व्युत्पन्न किए जाते हैं। थैलेट प्लास्टिसाइजर्स का उपयोग फ्लेक्सिबल पी वी सी उत्पादों जैसे कंवल, पाइप तथा होज, लेदर क्लॉथ, जूतों, पैकेजिंग फिल्म आदि के उत्पादन में किया जाता है। पी ए एन का अन्य प्रमुख उपयोग पॉलीस्टर रेजिन्स के उत्पादन में तथा गौण उपयोग पेंट्स तथा लेकर्स, कतिपय रंजकों, इन्सेक्ट रिपेलेंट्स, पॉलीस्टर पॉलीथॉल्स तथा पॉलीयूरीथेन्स के उत्पादन हेतु प्रयुक्त एक्लाकड रेजिन्स के उत्पादन में किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग रबड़ स्कार्च इनटीबीटर तथा रिटार्डर के रूप में भी किया जाता है।

27. जांच की प्रक्रिया के दौरान किसी भी हितबद्ध पार्टी ने आयातित पी ए एन तथा घरेलू तौर पर उत्पादित पी ए एन की उत्पादन प्रक्रिया, विशेषताओं अथवा अंतिम उपयोगों में अंतर के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया। अतः यह माना जाता है कि घरेलू तौर पर उत्पादित पी ए एन आयातित जांचाधीन उत्पाद के समान है अथवा सभी प्रकार से उसके समान वस्तु है और घरेलू तौर पर उत्पादित पी ए एन रक्षोपाय शुल्क नियम 1997 के नियम 2 (ड) के अर्थ के भीतर आयातित पी ए एन के समान वस्तु है।

च.2 घरेलू उद्योग

28. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8 ख (6)(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

(ख) "घरेलू उद्योग" से अभिप्रेत है -

- (i) समान वस्तु अथवा भारत में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के सभी उत्पादक अथवा
- (ii) जिनका समान वस्तु अथवा भारत में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के सामूहिक उत्पादन का भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है।

29. मामले के रिकार्ड के अनुसार भारत में पी ए एन के पांच घरेलू उत्पादक हैं अर्थात् (1) मेसर्स तिरुमलै केमिकल्स लि0 (2) मेसर्स आई जी पेट्रोकेमिकल्स लि0 (3) मेसर्स मैसूर

पेट्रोकेमिकल्स लि0 (4) मेसर्स एस आई ग्रुप इण्डिया लि0 और (5) मेसर्स एशियन पेंट्स लि0 । यह आवेदन (1) से (4) में उल्लिखित उत्पादकों ने प्रस्तुत किया है । पांचवें उत्पादक अर्थात् मेसर्स एशियन पेंट्स लि0 ने याचिका का समर्थन किया है । चारों आवेदक उत्पादकों का 2005-06 से 2008-09 के दौरान भारत में पी ए एन के कुल उत्पादन में योगदान 85 प्रतिशत से 90 प्रतिशत है । इस प्रकार आवेदक उत्पादकों के सामूहिक उत्पादन का भारत में पी ए एन के कुल उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है । इसके अलावा हितबद्ध पार्टियों ने आवेदकों के घरेलू उद्योग होने के विरोध में कोई दावा नहीं किया है । अतः यह माना जाता है कि चारों आवेदक घरेलू उत्पादक रक्षोपाय शुल्क नियम 1997 की धारा 8 ख (6)(ख)(iii) के अंतर्गत यथा परिभाषित एवं उसके अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं और उसका प्रतिनिधित्व करते हैं ।

च.3 संवर्धित आयात

30. जांच शुरुआत सूचना में डी जी सी आई एस एवं आई बी आई एस के आयात आंकड़ों पर विश्वास किया गया था । डी जी सी आई एस के आंकड़ों का उपयोग 2005-06, 2006-07 तथा अप्रैल 2007 दिसम्बर 2007 की अवधि के लिए किया गया है । आई बी आई एस ने आंकड़ों का उपयोग जनवरी 2008 से सितम्बर 2008 की अवधि हेतु किया गया है । डी जी सी आई एस के अक्टूबर 2008 तक के आंकड़ों और आई बी आई एस के नवम्बर 2008 से दिसम्बर 2008 तक के आंकड़ों के अनुसार आयात आंकड़ों को दिसम्बर 2008 तक अद्यतित कर लिया गया है । आंकड़ों के समय को दिसम्बर 2008 माह तक सीमित कर दिया गया है चूंकि प्रारंभिक निष्कर्ष 1 जनवरी 2009 को जारी किए गए थे इसके अतिरिक्त अस्थायी उतार-चढ़ाव एवं मौसमी प्रभावों को समानरूप से वितरित करने हेतु तार्किक रूप से लम्बा समय लिया गया है ।

31. निर्यातों में निरपेक्ष वृद्धि: जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है, संदर्भित आंकड़ों के आधार पर यह देखा गया है कि आयातों में 117 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और 2006-07 में 14133 मी.टन से बढ़कर अप्रैल 08-दिसम्बर 08 के दौरान 30613 मी.टन हो गए ।

वर्ष	आंकड़ों का स्रोत	आयातित मात्रा मी.टन में
2005-06	डी जी सी आई एस	24092
2006-07	डी जी सी आई एस	14133
2007-08	डी जी सी आई एस	31203
2008-09 (दिसम्बर 2008 तक)	अक्टूबर 08 तक डी जी सी आई एस + नवम्बर 08 - दिसम्बर 08 आई बी आई एस	30613
2008-09 वार्षिकीकृत		40817

32. वर्ष-दर-वर्ष तुलना से ज्ञात होता है कि वर्ष 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान आयातों में पूर्ववर्ती वर्ष की तदनुसूची अवधि की तुलना में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसे निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

वर्ष	आंकड़ों का स्रोत	आयातित मात्रा मी.टन में	सूची
अप्रैल 07 - दिसम्बर 07	डी जी सी आई एस	23993	100
अप्रैल 08 - दिसम्बर 08	अक्टूबर 08 तक डी जी सी आई एस + नवम्बर 08 - दिसम्बर 08	30613	128

आई बी आई एस

33. **आयातों में सापेक्ष वृद्धि:** कुल घरेलू उत्पादन के प्रतिशत के रूप में आयात, वी 2005-06 में 14 प्रतिशत थे। ये वी 2006-07 में घटकर 7 प्रतिशत रह गये परन्तु फिर बढ़कर 2007-08 में 14 प्रतिशत हो गए, इस स्तर से 2008-09 के प्रथम नौ महीनों में आयात कुल घरेलू उत्पादन का 23 प्रतिशत हो गया जो सापेक्षिक रूप में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है, जिसे निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:-

वी	आयातित मात्रा मी.टन में	सूचीबद्ध	कुल घरेलू उत्पादन (मी टन)	कुल घरेलू उत्पादन के % के रूप में आयात
2005-06	24092	100	168578	14%
2006-07	14133	59	201108	7%
2007-08	31203	130	220168	14%
2008-09 (दिसम्बर 2008 तक)	30613	127	134773	23%

34. **आयातों में मध्यवर्ती प्रवृत्ति:** वी 2005-06 के दौरान आयात 24092 मी.टन के हुए थे। वी 2006-07 में ये घटकर 14133 मी.टन रह गए। तथापि आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई और ये 2007-08 के दौरान 31203 मी.टन के स्तर पर पहुँच गए। वी 2005-06 की तुलना में आयातों में 2007-08 में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके मद्देनजर आयातों में वी 2006-07 के दौरान अस्थायी गिरावट देखी गई। वी 2005-06 को आधार वी मानते हुए आयातों में वृद्धि का विश्लेषण किया गया। इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या आयातों में वृद्धि हुई, वी 2008-09 के आयातों की तुलना वी 2007-08 के आयातों से दी गई।

35. वी 2005-06 की तुलना में वी 2007-08 के दौरान आयातों में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस वृद्धि के अलावा वी 2008-09 के पहले नौ महीनों के दौरान किए गए आयात पूरे वी 2007-08 के दौरान आयातों का 98 प्रतिशत थे। वार्षिकीकृत आधार पर 2008-09 के दौरान हुए आयात, वी 2007-08 के दौरान हुए आयातों के 130 प्रतिशत बनते हैं।

36. उपर्युक्त को देखते हुए यह नैकी निकाला जाता है कि आयातों में निरपेक्ष रूप में तथा सापेक्षिक रूप में वृद्धि हुई और आयातों में वृद्धि हाल ही में हुई, अचानक हुई, तेजी से हुई और अत्यधिक हुई।

च.4 संवर्धित आयातों का कारण

i अप्रत्याशित घटनाक्रम

37. आयातों में हुई वृद्धि के कारणों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नानुसार है, जिन्हें मामले के रिकार्ड तथा हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर एकत्र किया गया है:-

- क. सभी हितबद्ध पक्षकारों ने सर्वसम्मति से कहा है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में हाल ही में आई मंदी ने उद्योग जगत के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इस सीमा तक ऐसी वैश्विक मंदी वास्तव में अप्रत्याशित थी।
- ख. वैश्विक वित्तीय संकट वीं 2008 में अमेरिकी उप मुख्य संकट के कारण उत्पन्न हुआ और यह भी अप्रत्याशित था। वीं 2008 की पहली तिमाही के दौरान वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत के कारण पी ए एन के प्रमुख उत्पादकों ने यू एस ए और चीन का अपना पारस्परिक बाजार गंवा दिया। दक्षिण कोरिया में वित्तीय संकट गहराने के साथ स्थिति और भी बदतर हो गई। विदेशी निवेशकों ने वीं 2008 के दौरान 31 ट्रिलियन वन (23 बिलियन डॉलर) का निवल कोरियाई स्टॉक बेच दिया। बैंकों के लिए वित्त पौण एक चुनौती बने रहने के कारण कोरिया का मुद्रा बाजार भी "दबाव के चिह्न" दर्शा रहा था। कोरियाई वान के मूल्य में लगभग 41 प्रतिशत की गिरावट आई और यह जनवरी 2008 में 941 कोरियाई वान प्रति अम.डॉलर से घटकर अक्टूबर 2008 में 1326 कोरियाई वान प्रति अम. डॉलर रह गया। कोरियाई वान में आई ऐसी कमजोरी के कारण कोरियाई निर्यातकों की निर्यात आय बढ़ गई और वे अपनी कीमतें कम करने पर प्रोत्साहित हुए यह घटनाक्रम अप्रत्याशित था।
- ग. कोरियाई पी ए एन और अधिकांश छोटे उत्पादों वाले उद्योग के लिए चीन और अमेरिका प्रमुख बाजार थे। कोरियाई पी ए एन उद्योग को जनवरी 08 से नवम्बर 08 के बीच गिरावट का सामना करना पड़ा। मार्च 2008 के बाद चीन द्वारा कुल खरीद में गिरावट की शुरुआत हो गई। बीजिंग ओलम्पिक के बाद चीन द्वारा कुल खरीद में बढ़ोतरी होने की अपेक्षा थी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि प्रयोक्ता रासायनिक यूनितों को यांगत्झे घाटी से बाहर चले जाने का आदेश दे दिया गया था। वैश्विक आर्थिक संकट ने विश्वी रूप से अमेरिकी अर्थव्यवस्था में आई मंदी के कारण रासायनिक यूनितों की पुनः शुरुआत पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। ये घटनाक्रम स्पष्टतः अप्रत्याशित थे। कोरिया के निर्यात आंकड़े भी यह दर्शाते हैं कि चीन को पी ए एन का निर्यात जनवरी और फरवरी 2008 में 4000 से 5000 मी.टन की तुलना में घटकर अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर 2008 में 1500-2000 मी.टन रह गया था।
- घ. कोरिया के अलावा ताइवान और अंशतः इंडोनेशिया को भी इसी समस्या का सामना करना पड़ा था और उन्हें पी ए एन का निर्यात अन्य बाजारों को करने हेतु विवश होना पड़ा था। ताइवान के उत्पादकों के लिए भी बाजार के स्थिति में आया यह बदलाव अप्रत्याशित था।
- ड. पाकिस्तान ने भारत को पी ए एन का निर्यात 2007-08 में शुरू किया था। उसने 2007-08 के दौरान 1673 मी.टन का निर्यात किया और चालू वीं के दौरान आयात बढ़कर 3341 मी.टन (अप्रैल-अक्टूबर 08 तक डी जी सी आई एस के आंकड़ों और नवम्बर 08 से दिसम्बर 08 तक आई बी आई एस के आंकड़ों के अनुसार) हो गया। पाकिस्तान से इतनी भारी मात्रा में आयात प्रत्याशित नहीं था।
- च. प्रभावित देशों के वैकल्पिक बाजार तलाश रहे उत्पादकों के लिए भारतीय बाजार एक बहुत बड़ा बाजार था।
38. कुछेक हितबद्ध पार्टियों ने कहा है कि आर्थिक मंदी को "अप्रत्याशित" नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि मंदी सामान्य व्यवसाय चक्र का एक हिस्सा होती है। मंदी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा है परन्तु मंदी का काफी हद तक सामना करने के लिए तीस के दशक में आई भारी मंदी के कारण पूंजीवादी दर्शन एवं आर्थिक सिद्धांतों में बदलाव आ गया था। अलग-अलग समय पर

कतिपय अर्थव्यवस्थाओं के मंदी से प्रभावित होने के अनेक उदाहरण हैं, परंतु मंदी का समय और उसकी तीव्रता का पूर्वानुमान कर पाना सदैव दुँकर रहा है। इसके अलावा इतनी अधिक तीव्रता की मंदी का पूर्वानुमान लगाने और प्रत्याशा कर पाना संभव नहीं था जिसने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को अपनी चपेट में ले लिया हो और अर्थव्यवस्था की वृद्धि को नकारात्मक कर दिया हो। यदि वर्तमान संकट का पूर्वानुमान संभव होता तो इस संकट को टाला जा सकता था। जहां तक डब्ल्यू टी ओ की अपेक्षाओं को पूरा करने का संबंध है, यह जानना अपेक्षित है कि क्या ऐसी मंदी प्रत्याशित थी। सभी उद्योगों और सभी देशों में आई मंदी के समय और गम्भीरता को देखते हुए वर्तमान मंदी स्पष्टतः अप्रत्याशित थी।

39. कुछेक हितबद्ध पार्टियों ने तर्क प्रस्तुत किया है कि विश्व भर में पी ए एन विनिर्माण उद्योगी इसी प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है। तुर्की, स्पेन, रोमानिया आदि में पी ए एन विनिर्माण संयंत्र बंद हो गए हैं और यह समस्या केवल भारत तक सीमित नहीं है। ये तर्क इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में हाल ही में हुआ घटनाक्रम वैश्विक स्तर से अप्रत्याशित था और विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं इससे विभिन्न स्तरों पर प्रभावित हुई हैं।

40. उपर्युक्त को देखते हुए निम्नी निकाला जाता है कि भारत में पी ए एन आयातों में वृद्धि और उल्लिखित अप्रत्याशित घटनाक्रम के परिणामस्वरूप हुई।

ii. गैट के अंतर्गत की गई वचनबद्धताएं

41. पी ए एन उन उत्पादों में से एक है जिसके संबंध में भारत ने गैट 1994 के अनुच्छेद II के अनुसरण में टैरिफ रियायतें प्रदान की हैं।

42. कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि आयात शुल्क में वर्तमान स्तर की 7.5 प्रतिशत की कमी वी 2007 में की गई थी और घरेलू उत्पादकों को वी 2008 के उत्तरार्द्ध तक किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा था, अतः घरेलू उत्पादकों को पेश आ रही वर्तमान समस्याओं को टैरिफ में कमी से नहीं जोड़ा जा सकता।

43. जहां तक जांचाधीन उत्पाद पर टैरिफ रियायतों सहित गैट 1994 के अंतर्गत भारत द्वारा की गई कतिपय वचनबद्धताओं का संबंध है, यह माना जा सकता है कि आयातों में वृद्धि इस प्रकार की गई वचनबद्धताओं के प्रभावों के कारण हुई। अतः निम्नी निकाला जाता है कि आयातों में वृद्धि अप्रत्याशित घटनाक्रम और भारत द्वारा गैट 1994 के अंतर्गत की गई वचनबद्धताओं के प्रभाव के परिणामस्वरूप हुई।

घ. 5 गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति का खतरा

44. उत्पादन: आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण हेतु आयातों के समरूप समय को संज्ञान में लिया गया है। घरेलू उत्पादन 2005-06 में 168578 मी.टन से बढ़कर 2006-07 में 201108 मी. टन और 2007-08 में बढ़कर 220168 मी.टन हो गया। तथापि वी 2008-09 के पहले 9 माह के दौरान उत्पादन केवल 134774 मी.टन था। वार्षिकीकृत आधार पर (तुलना के प्रयोजनार्थ) यह पूर्ववर्ती वी में 220168 की तुलना में 2008-09 के लिए 179697 था, जिसमें 18 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

वर्ष	आयातित मात्रा मी.टन में	आयातित मात्रा (सूची)	कुल घरेलू उत्पादन (मी टन)	कुल घरेलू उत्पादन (सूची)	कुल घरेलू उत्पादन के % के रूप में आयात
2005-06	24092	100	168578	100	14%
2006-07	14133	59	201108	119	7%
2007-08	31203	130	220168	131	14%
2008-09 (दिसम्बर 2008 तक)	30613	127	134773	80	23%
2008-09	40817	169	179697	107	23%

45. उत्पादन में 26 प्रतिशत की गिरावट आई और यह अप्रैल 08 - सितम्बर 08 के दौरान 101515 मी. टन से घटकर अक्टूबर 08-दिसम्बर 08 में 8284 मी टन रह गया, जबकि कुल घरेलू उत्पादन के प्रतिशत के रूप में आयात अप्रैल 08 - सितम्बर 08 में 22 प्रतिशत से बढ़कर अक्टूबर 08 - दिसम्बर 08 में 25 प्रतिशत हो गए।

अवधि	आयातित मात्रा मी.टन में	कुल घरेलू उत्पादन (मी टन)	कुल घरेलू उत्पादन के % के रूप में आयात
अप्रैल 08 से सितम्बर 08	22329	101515	22%
अक्टूबर 08 - दिसम्बर 08	8284	33258	25%
कुल	30613	134773	23%

46. कुछेक हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि कुल उत्पादन में निर्यात उत्पादन भी जोड़ दिया गया है। तथापि इस जांच में "घरेलू बाजार हेतु उत्पादन" ज्ञात करने के लिए उत्पादन की कुल मात्रा में से निर्यात बिक्री की मात्रा घटा दी गई थी। इस प्रकार निर्धारित घरेलू बाजार हेतु उत्पादन से संबंधित आंकड़ों को ही इस विश्लेषण में प्रयुक्त किया गया है।

47. **क्षमता उपयोग:** क्षमता उपयोग 2005-06 में 77 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 86 प्रतिशत और 2007-08 में 91 प्रतिशत हो गया। परन्तु अप्रैल 2008 - सितम्बर 2008 के दौरान यह अत्यधिक घटकर 79 प्रतिशत रह गया। आयातों में हुए वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग ने अपना उत्पादन घटा दिया है।

वर्ष	संस्थापित क्षमता (मी टन)	उत्पादन (मी टन)	क्षमता उपयोग
2005-06	220000	168578	77%
2006-07	233000	201108	86%
2007-08	243000	220168	91%
अप्रैल 08 - सितम्बर 08	129000	101515	79%
अक्टूबर 08 - दिसम्बर 08	68250	33258	49%
2008-09 (दिसम्बर 2008 तक)	197250	134773	68%

48. **उत्पादकता:** घरेलू उत्पादकों के पास आधुनिकतम संयंत्र उपलब्ध हैं और उत्पादकता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

49. **बिक्री:** घरेलू उद्योग की बिक्री 2005-06 में 104596 मी टन यूनिटों से बढ़कर 2006-07 में 130895 मी टन और 2007-08 में और भी बढ़कर 140272 मी टन हो गई। तथापि अप्रैल-सितम्बर 2008 के दौरान घरेलू बिक्री घटकर 71148 मी टन रह गई और अक्टूबर-दिसम्बर 2008 के दौरान और भी घटकर 25033 मी टन रह गई। इसमें 9 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्ज की गई। वार्षिकीकृत आधार पर (तुलना के प्रयोजनार्थ) यह 2008-09 के दौरान 128241 मी टन थी जबकि पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान यह 140272 मी टन थी, जिसमें 9 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

विवरण	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल-सितम्बर)	2008-09 (अक्टूबर-दिसम्बर)	2008-09 अप्रैल-दिसम्बर	2008-09 वार्षिकीकृत
घरेलू बिक्री (मी टन)	104596	130895	140272	71148	25033	96181	128241
सूचीबद्ध	100	125	134	68	24	92	123

50. **मांग तथा बाजार हिस्सा:** भारत में पी ए एन की मांग वर्ष 2005-06 में 128688 मी टन थी। यह 2006-07 में बढ़कर 145028 मी टन हो गई तथा 2007-08 में और बढ़कर 171475 मी टन हो गई। वर्ष 2008-09 के पहले नौ महीनों के दौरान यह घटकर 126794 मी टन रह गई। वार्षिकीकृत आधार पर मांग 2008-09 में 128241 मी टन थी जिसमें 2 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। इस प्रकार सिकुड़ते बाजार में आयातों का हिस्सा 2007-08 में 18 प्रतिशत से बढ़कर 2008-09 में 24 प्रतिशत हो गया। तदनुसार घरेलू उद्योग का हिस्सा 2007-08 में 82 प्रतिशत से घटकर 2008-09 में 76 प्रतिशत रह गया।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल-सितम्बर)	2008-09 (अक्टूबर-दिसम्बर)	2008-09 (अप्रैल-दिसम्बर)	2008-09 वार्षिकीकृत
आयात	मी टन	24092	14133	31203	22329	8284	30613	40817
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी टन	104596	130895	140272	71148	25033	96181	128241
भारत में खपत	मी टन	128688	145028	171475	93477	33317	126794	169059
भारत में खपत	सूचीबद्ध	100	113	133	73	26	99	131
आयात	%	19%	10%	18%	24%	25%	24%	24%
घरेलू उद्योग	%	81%	90%	82%	76%	75%	76%	76%

51. **स्टॉक:** अंतिम स्टॉक की मात्रा 2005-06 में 100 सूचीबद्ध से घटकर 2006-07 में 95 सूचीबद्ध रह गई और यह 2007-08 में और भी घटकर 82 सूचीबद्ध हो गई। विगत तीन वर्षों में आई कमी का कारण घरेलू बिक्री में वृद्धि होना था। घरेलू बिक्री में वृद्धि के परिणामस्वरूप ऐसा हुआ कि क्योंकि घरेलू बिक्री में गिरावट आई थी। अंतिम स्टॉक दिसम्बर 2008 के अन्त में घटकर 67 सूचीबद्ध रह गया। जांच करने पर यह पाया गया कि स्टॉक में आई कमी का कारण उत्पादन में गिरावट आना था। यह भी देखा गया कि बिक्री की मात्रा के प्रतिशत के रूप में अंतिम स्टॉक 2007-08 में 4.43 से बढ़कर दिसम्बर 2008 तक 5.29 हो गया।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल-दिसम्बर)
अंतिम स्टॉक	मी टन	***	***	***	***
अंतिम स्टॉक	सूचीबद्ध	100	95	82	67

माल सूची में बिक्री का अनुपात	अनुपात	***	***	***	***
-------------------------------	--------	-----	-----	-----	-----

52. **रोजगार:** अक्टूबर से दिसम्बर 2008 की लम्बी अवधि के दौरान संयंत्र बंद होने के कारण अनेक कर्मचारी (लगभग 700) बेरोजगार हो गए।

53. **घरेलू बिक्री कीमतें:** घरेलू उद्योग ने कहा है कि आयातित पी ए एन की पहुँच कीमत के मद्देनजर घरेलू उद्योग पी ए एन की बिक्री कम कीमत पर करने पर विवश हो गया था। चूँकि आयातित पी ए एन का पहुँच मूल्य बहुत कम था, घरेलू बिक्री करने पर घरेलू उद्योग को भारी घाटा उठाना पड़ा। यह देखा जा सकता है कि बिक्री कीमतें 2008-09 की पहली तिमाही में 100 से बढ़कर द्वितीय तिमाही में 114 हो गई। तथापि, जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है, 2008-09 की तीसरी तिमाही के दौरान औसत बिक्री कीमतें घटकर 81 हो गई।

		तिमाही I	तिमाही II	तिमाही III
औसत घरेलू बिक्री कीमत	रु./मी. टन	***	***	***
	सूची	100	114	81

54. चारों आवेदक उत्पादकों की वीं 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान मासिक बिक्री कीमतों की अलग-अलग जाँच की गई। अप्रैल 2008 के दौरान चारों उत्पादकों की कीमतें *** रुपये प्रति मी टन से *** रुपये प्रति मी टन के बीच थीं। जब कीमतों में गिरावट आई तो कुछ उत्पादकों को अपनी कीमतें अन्य उत्पादकों की तुलना में कम रखनी पड़ीं। दिसम्बर 2008 में जहाँ एक उत्पादक ने *** रुपये प्रति मी.टन की दर से बिक्री की वहीं दूसरे उत्पादक ने *** रुपये प्रति मी.टन की दर से बिक्री की। समग्र आधार पर 2008-09 की दूसरी तिमाही में कीमतें बढ़ने लगीं परन्तु 2008-09 की तीसरी तिमाही में इनमें गिरावट आई, अतः अलग-अलग घरेलू उत्पादकों की कीमतों का रुख एक समान रहा।

विवरण	आई जी पी एल	एग पी सी एल	टी सी एल	एस आई ग्रुप	औसत	सूचीबद्ध
अप्रैल-08	***	***	***	***	***	100
मई-08	***	***	***	***	***	102
जून-08	***	***	***	***	***	116
जुलाई-08	***	***	***	***	***	126
अगस्त-08	***	***	***	***	***	125
सितम्बर-08	***	***	***	***	***	111
अक्टूबर-08	***	***	***	***	***	103
नवम्बर-08	***	***	***	***	***	84

दिसम्बर-08	***	***	***	***	***	70
------------	-----	-----	-----	-----	-----	----

55. घरेलू बिक्री कीमतों की तुलना आयातित पी ए एन के पहुँच मूल्य से की गई। वी 2005-06 के दौरान घरेलू कीमतें 100 अंक थीं, जो पहुँच मूल्य की तुलना में कम थीं। वी 2006-07 और 2007-08 के दौरान आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू बिक्री कीमतों से मामूली तौर पर अधिक था। वी 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू बिक्री कीमतों से 16.07 अंक कम था। यह देखा गया था कि बिक्री को जारी रखने के लिए घरेलू बिक्री कीमतों को घटाकर आयातित वस्तुओं के पहुँच मूल्य के स्तर तक लाना पड़ा। अन्यथा घरेलू उद्योग सूचित घरेलू बिक्री हासिल करने में समर्थ नहीं होता।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल-दिसम्बर)
घरेलू बिक्री से प्राप्त आय	रुपये/मी टन	***	***	***	***
आयातों का पहुँच मूल्य	रुपये/मी टन	48312	57563	56531	58157
अंतर	रुपये/मी टन	***	***	***	***
अंतर सूचीबद्ध	रुपये/मी टन	(100)	(38.35)	(6.82)	16.07

56. पी ए एन की कीमत प्रवृत्ति की जांच लागत में घट-बढ़ के अनुसार भी की गई। चूँकि कुल लागत में ओ-जाइलीन का उल्लेखनीय योगदान है, अतः ओ-जाइलीन की कीमतों की जांच की गई।

विवरण	आईजीपीएल	एमपीसीएल	टीसीएल	एसआई ग्रुप	कंसोलिडेटेड	सूचीबद्ध
अप्रैल 08	***	***	***	***	***	100
मई 08	***	***	***	***	***	105
जून 08	***	***	***	***	***	114
जुलाई 08	***	***	***	***	***	136
अगस्त 08	***	***	***	***	***	141
सितम्बर 08	***	***	***	***	***	135
अक्टूबर 08	***	***	***	***	***	122
नवम्बर 08	***	***	***	***	***	99
दिसम्बर 08	***	***	***	***	***	64
जनवरी 09	***	***	***	***	***	77
फरवरी 09	***	***	***	***	***	87
मार्च 09	***	***	***	***	***	96

57. यह देखा गया कि कच्चे माल की कीमतों में आई गिरावट की तुलना में पी ए एन की कीमतों में अधिक तेजी से गिरावट आई।

58. इसके अलावा पी ए एन की घरेलू बिक्री कीमतों की तुलना बिक्री की लागत से की गई। बिक्री की लागत वित्तीय वर्ष 2008-09 के पहले छह माह के दौरान 140 युनिट से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही में 186 युनिट हो गई। जबकि इसी अवधि के दौरान घरेलू बिक्री से आय 141 युनिट से घटकर मात्र 104 युनिट रह गई। कीमतें अत्यंत अलाभदायक थी और इनमें काफी मंदी रही।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल-सितम्बर)	2008-09 (अक्टूबर से दिसम्बर)	2008-09 (अप्रैल से दिसम्बर)
बिक्री कीमत	रुपये/मी टन	***	***	***	***	***	***
बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100	119	116	140	186	148
बिक्री प्राप्ति	रुपये/मी टन	***	***	***	***	***	***
बिक्री प्राप्ति	सूचीबद्ध	100	126	126	141	104	131
लाभ/हानि	रुपये/मी टन	***	***	***	***	***	***
लाभ/हानि	सूचीबद्ध	(100)	124	244	(112)	(3217)	(775)

59. **लाभप्रदता:** वर्ष 2005-06 के दौरान घरेलू उत्पादकों को 100 युनिट का घाटा हुआ। इस घाटे से उबरकर उन्होंने 2006-07 के दौरान 124 युनिट का लाभ अर्जित किया। 2007-08 के दौरान लाभ बढ़कर 244 युनिट हो गया। इतनी कम कीमतों पर देश में संवर्धित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय वर्ष 2008-09 के पहले छह माह के दौरान 112 युनिट का घाटा हुआ, जो और बढ़कर 3217 युनिट हो गया, जिसे उपर्युक्त तालिका में दर्शाया गया है।

60. **नकद लाभ:** वर्ष 2005-06 के दौरान घरेलू उद्योग ने 100 युनिट का नकद लाभ अर्जित किया। वर्ष 2006-07 में यह बढ़कर 1564 युनिट हो गया और 2007-08 में और भी बढ़कर 2460 युनिट हो गया। तथापि घरेलू उद्योग को 2008-09 के पहले छह माह के दौरान 271 युनिट का नकद घाटा उठाना पड़ा और पुनः वित्तीय वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ महिनों में 5369 युनिट का घाटा हुआ।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल से)	2008-09 (अक्टूबर से दिसम्बर)	2008-09 (अप्रैल से दिसम्बर)
नकद लाभ	रुपये/पीएमट	***	***	***	***	***	***
नकद लाभ	सूचीबद्ध	100	1,564	2,460	-271	-23927	-5,369

61. **नियोजित पूंजी से आय:** घरेलू उद्योग ने 2005-06 के दौरान 2 प्रतिशत का नकारात्मक आर ओ सी ई प्राप्त किया था। आर ओ सी ई वर्ष 2006-07 के दौरान बढ़कर क्रमशः 12 प्रतिशत और 18 प्रतिशत हो गया। तथापि वित्तीय वर्ष 2008-09 के पहले छह माह के दौरान आर ओ सी ई तेजी से घटकर नकारात्मक 4 प्रतिशत हो गया और वर्ष 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान और घटकर नकारात्मक 8 प्रतिशत हो गया।

62. उपर्युक्त को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि वर्ष 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का सामना करना पड़ा।

च.6 गंभीर क्षति के कारण:

63. आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के निर्धारण में रक्षोपाय शुल्क नियमावली के अनुबंध में यह अपेक्षा की गई है कि महानिदेशक वस्तुनिष्ठ एवं संख्यात्मक स्वरूप के उन सभी संबंधित कारकों का मूल्यांकन करेंगे जो घरेलू उद्योग की स्थिति, विशेष रूप से संबंधित वस्तु की दर और मात्रा में निरपेक्ष तथा सापेक्षित वृद्धि, संवर्धित आयातों द्वारा हथियाए गए घरेलू बाजार के हिस्से, बिक्री, उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, लाभ तथा हानि एवं रोजगार के स्तर में परिवर्तन को प्रभावित करते हैं।

64. (क) आयातों की दर और मात्रा में वृद्धि तथा (ख) आयातित पी ए एन की कम कीमतों और कम पहुँच मूल्य तथा (ग) इस तथ्य के मद्देनजर कि आयातों में वृद्धि होने पर घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री बाजार हिस्से, लाभ आदि में अत्यधिक गिरावट आई; यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति पहुँची।

65. कुछेक हितबद्ध पार्टियों ने कहा है कि आयातों की तुलना में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कोई अत्यधिक गिरावट नहीं आई जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि संवर्धित आयातों के कारण गंभीर क्षति पहुँची है। जैसा कि ऊपर विवेचर किया गया है, घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 2005-06 में 81 प्रतिशत से घटकर वित्तीय वर्ष 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान 76 प्रतिशत रह गया जबकि इसी अवधि के दौरान आयातों का बाजार हिस्सा 19 प्रतिशत से बढ़कर 24 प्रतिशत हो गया। तदनुसार संवर्धित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध विद्यमान है।

66. पैरा 6 के अंतर्गत उल्लिखित सभी कारकों के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संवर्धित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध विद्यमान है।

67. इसी समय क्षति पहुँचाने वाले अन्य कारक: आयातों में वृद्धि से इतर अन्य कारकों की भी जांच की गई जो उस समय कार्यरत थे और जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई। इस संबंध में विशेष रूप से निम्नलिखित कारकों की जांच की गई:-

(क) घरेलू उद्योग के निर्यात निषादन में गिरावट:

कुछेक पार्टियों ने तर्क प्रस्तुत किया है कि घरेलू उद्योग को घाटे का सामना निर्यात बिक्री में कमी के कारण करना पड़ा है, न कि संवर्धित आयातों के कारण। यह देखा गया है कि वर्ष 2008-09 के पहले नौ माह के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में कमी आई जिसका ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

वर्ष	निर्यात मात्रा (मी टन)	निर्यात मात्रा (सूची)
2005-06	***	100
2006-07	***	112
2007-08	***	127
2008-09 (दिसम्बर 2008 तक)	***	60

2008-09 वार्षिकीकृत

81

68. तथापि क्षति के विश्लेषण में उत्पादन के बाद निर्यात कार्यकलापों के प्रभाव को हटा दिया गया है। वास्तविक उत्पादन ज्ञात करते समय "घरेलू उद्योग का उत्पादन" कुल उत्पादन घटा निर्यात बिक्री को माना गया है। घरेलू बिक्री की मात्रा, बाजार हिस्से, घरेलू बिक्री कीमतों, लाभ आदि जैसे अन्य कारकों का निर्यात निर्यात के साथ कोई संबंध नहीं है। अतः क्षति का विश्लेषण करते समय निर्यात कार्यकलापों के प्रभावों को हटाने का पर्याप्त ध्यान रखा गया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि निर्यात निर्यात घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं था।

69. मंदी के कारण हुआ घाटा: कुछेक पार्टियों ने दावा किया है कि वर्ष 2008 की मंदी और वैश्विक धीमेपन के दौरान पेट्रो रसायन क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ था। विश्व भर में अनेक संयंत्र बंद हो गए थे। मंदी की इस अवधि के दौरान याचिकाकर्ताओं का 79 प्रतिशत का क्षमता उपयोग उत्साहजनक था और याचिकाकर्ताओं को कोई सापेक्षिक क्षति नहीं हुई है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि 79 प्रतिशत क्षमता उपयोग वर्ष 2008-09 का औसत था। क्षति अपने विकराल रूप में आर्थिक संकट के बाद शुरू हुई जिसने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। अक्टूबर-दिसम्बर 2008 की अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 49 प्रतिशत रहा। क्षमता उपयोग में अचानक आई यह गिरावट संवर्धित आयातों के कारण आई, जिसके कारण कीमतें बहुत कम हो गईं और घरेलू उद्योग के लिए अपूरणीय घाटा उठाये बिना बिक्री करना संभव नहीं था। जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है, पी ए एन की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में गिरावट आई है।

70. मंदी के कारण संवर्धित आयात अत्यंत कम कीमत पर हुए जिनके कारण गंभीर क्षति हुई और गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हुआ।

71. कुछेक हितबद्ध पार्टियों ने दावा किया है कि संयंत्र का बंद रखा जाना अनुरक्षण की एक सामान्य प्रक्रिया था और बंद रखे जाने का कारण संवर्धित आयात नहीं थे। संयंत्र के उत्पादन रिकॉर्ड की जांच की गई और यह पाया गया कि अनुरक्षण के कारण संयंत्र को इतनी लंबी अवधि तक पहले कभी बंद नहीं रखा गया जितना अक्टूबर 2008 से जनवरी 2009 तक रखा गया।

कंपनी	बंद रखे जाने की अवधि	दिनों की संख्या
तिरुमलाई केमिकल्स लिमिटेड	07.10.2008 से 20.12.2008 तक	74
एस आई ग्रुप	11 अक्टूबर 08 से 17 नवम्बर 08 एवं 11 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 08 तक	54
एम पी सी एल	1 नवम्बर 08 से 18 जनवरी 09 तक	78
आई जी पी एल	25.10.08 से 10.11.08 से एक प्लांट की वार्षिक क्षमता 50000 मी टन	16

प्राथमिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद उत्पादन फिर शुरू हो गया था।

72. आई पी एम ए ने कहा है कि तिरुमलाई केमिकल्स लिमिटेड ने दिनांक 29.1.2009 की बैठक की सूचना के माध्यम से मलेशिया में अपने एक संयुक्त उद्यम में 18.27 करोड़ रुपये के अपने निवेश की राशि को समायोजित करने का मंतव्य व्यक्त किया था, ताकि वह भारत में रक्षोपाय लागू करने का समर्थन कर सके। इसके उत्तर में तिरुमलाई केमिकल्स ने कहा कि निवेश की राशि को बट्टे खाते डालने का वित्त पौण पूंजी आरक्षी खाते, आमेलन आरक्षी खाते तथा प्रतिभूति प्रीमियम खाते से किया जाएगा, जैसाकि बैठक की सूचना के साथ संलग्न संश्लेष के मसौदे में

बताया गया है, जिस पर आई पी एम ए द्वारा विश्वास किया गया है। तिरुमलाई केमिकल्स लिमिटेड ने आगे यह भी कहा कि इस समायोजन से उनके लाभ/घाटे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मैंने यह पाया है कि मलेशिया में संयुक्त उद्यम में निवेश को बढ़ते खाते खोलने का भारत में स्लोपाय लागू करने से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि इसे लागू करने का उद्देश्य भारतीय बाजार में उन्हें आ रही समस्याओं का समाधान करना है।

73. इसके अलावा ऐसे कोई अन्य कारण नहीं थे जिनके कारण उस समय घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। तदनुसार, यह निर्यात निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति संवर्धित आयातों के कारण हुई है।

74. गंभीर क्षति का खतरा: दिसम्बर 2008 के अंत तक आयातों में वृद्धि जारी रही। अप्रत्याशित, घटनाक्रम के स्वल्प और गंभीरता को ध्यान में रखते हुए, जिनके कारण आयातों में वृद्धि हुई और उस अप्रत्याशित घटनाक्रम का प्रभाव वैश्विक तथा भारतीय बाजार पर गंभीर रूप से पड़ा है, यह निर्यात निकाला जाता है कि यदि कोई संरक्षक उपाय न किए जाए तो घरेलू उद्योग को क्षति का वास्तविक खतरा बना हुआ है।

घ. जनहित:

75. कुछेक पार्टियों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि स्लोपाय शुल्क लागू करने से जन हित गंभीर रूप से प्रभावित होगा क्योंकि अनेक प्रयोक्ता उद्योग बंद हो जाएंगे। यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि पी ए एन पर स्लोपाय शुल्क लगाने से यह महंगा हो जाएगा और यह उपभोक्ता हित के विरुद्ध होगा। तथापि इस संबंध में ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है, जो यह दर्शाता हो कि स्लोपाय शुल्क लगाने से प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, यह देखा गया है कि "जनहित" अभिव्यक्ति के दायरे में केवल उपभोक्ता हित को शामिल नहीं किया जाता। "जनहित" एक व्यापक शब्द है जिसके दायरे में व्यापक सामुदायिक हित को ध्यान में रखकर सामान्य सामाजिक कल्याण को शामिल किया जाता है। स्लोपाय शुल्क एक अप्रत्यक्ष कर होने के कारण विभिन्न आर्थिक प्रचालकों को भिन्न-भिन्न तरीके से प्रभावित कर सकता है क्योंकि बाजार अर्थव्यवस्था में विभिन्न आर्थिक प्रचालकों के परस्पर विरोधी हित विद्यमान हैं।

76. जनवरी 2009- मार्च 2009 की अवधि के दौरान भारत में प्रचलित कीमतों के विश्लेषण, अंतर्राष्ट्रीय कीमतों, कच्चे माल की कीमतों और घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री की लागत पर विचार किया गया है। इसके अलावा, भारतीय उद्योग की कुल उत्पादन क्षमता और भारत में मांग का भी विश्लेषण किया गया है। जनवरी 2009 - मार्च 2009 के दौरान 20826 मी. टन/माह की अतिरिक्त उत्पादन क्षमता मौजूद थी। भारत में उपलब्ध यह अतिरिक्त क्षमता घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा को बनाए रख सकती है। यह घरेलू प्रतिस्पर्धा की मौजूदगी को दर्शाता है जो घरेलू कीमतों में वृद्धि को स्लोपाय शुल्क का पूरा लाभ लेने से रोक रही है।

77. इस केस में, कच्चे माल का मूल्य सकल मूल्य का महत्वपूर्ण भाग है एवं कच्चे माल के मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों पर आश्रित होकर बदल रहे हैं। पीएएन के विक्रय मूल्य एवं ओएक्स (संदर्भ हेतु डेल्टा नाम से परिभाषित) जो कि प्रमुख कच्चा माल है, में अन्तर को जाँचा गया है। यह पाया गया कि डेल्टा 67 इकाई से 120 इकाई के बीच है। सितम्बर 2008 के माह में, यह ऋणात्मक हो गया एवं अक्टूबर व नवम्बर 2008 के बीच में 10 इकाई से 15 इकाईयों के बीच में रहा। जनवरी से मार्च 2009 के माह में, यह 67 इकाईयों से नीचे था, परन्तु तत्पश्चात् 10 से 15 इकाईयों से बढ़ कर 56 से 64 इकाईयों के बीच में हो गया। इससे स्पष्टरूप से पता चलता है कि अन्तिम उपभोक्ता को पीएएन प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यों पर आपूर्ति किया गया।

78. घरेलू उद्योग, रक्षोपाय शुल्क लगने के बाद भी, विक्रय मूल्यों को कच्चे माल की कीमतों में उतार चढ़ाव के अनुरूप बनाए रख रहा है। इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नजर नहीं आता कि घरेलू उद्योग अपने मूल्यों के ढोंचे को बदलेगा।

79. 25प्रतिशत का रक्षोपाय शुल्क केवल क्षति के प्रभाव को निष्प्रभावित करने तक ही है एवं आयातों से प्रतिस्पर्धा जीवित है। यह प्रतिस्पर्धा जारी है, इस तथ्य की पुष्टि जनवरी - अप्रैल 2009 के बीच के आयात के आंकड़ों से होती है। रक्षोपाय शुल्क के लगने के उपरान्त के आंकड़े निम्न हैं, जोकि कमागत आयात एवं स्वच्छ व्यापार की ओर इंगित करते हैं :

आईबीआईएस रिपोर्ट के अनुसार भारत में पीएन के आयात				
	जनवरी 2009	फरवरी 2009	मार्च 2009	अप्रैल 2009
	मी.टन में	मी.टन में	मी.टन में	मी.टन में
कोरिया गणराज्य	500	220	140	480
इण्डोनेशिया	120	—	—	—
इजराइल	1793	431	—	835
ताइवान	306	—	—	—
पाकिस्तान	—	—	200	100
सिंगापुर	—	—	—	60
कोरिया गणतन्त्र	—	—	—	—
इटली	—	—	—	105
चीन	—	188	—	40
कनाडा	—	—	—	400
जापान	—	—	—	75
थाईलैण्ड	60	—	—	—
ईरान	—	—	1725	2100
कुल	2779	839	2065	4195

80. इसके अलावा यदि घरेलू उद्योग को क्षति जारी रही तो इससे घरेलू उद्योग बंद हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप पी ए एन, जो एक महत्वपूर्ण रसायन है, का विनिर्माण भारत में नहीं होगा और इस प्रकार पी ए एन के प्रयोक्ता आयातों पर पूर्णतः निर्भर हो जाएंगे।

81. उपर्युक्त के मद्देनजर यह निर्र्की निकाला जाता है कि रक्षोपाय को लागू करना जनहित में होगा।

ज. अनंतिम उपाय:

82. प्राथमिक जांच परिणाम में यह अभिमत व्यक्त किया गया था कि पी ए एन के संबंधित आयातों के कारण पी ए एन के घरेलू उत्पादकों को क्षति हुई है और गंभीर क्षति का खतरा बना हुआ है। यह भी देखा गया था कि ऐसी गंभीर परिस्थितियां विद्यमान थीं, जब रक्षोपाय उपाय लागू करने में विलंब से इस उद्योग को अपूरणीय नुकसान का सामना करना पड़ता। उपर्युक्त पैराग्राफों में उल्लिखित क्षति से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण मानदंडों के संबंध में वर्ष 2008-09 के पहले नौ महीनों के दौरान घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति को देखते हुए यह निर्र्की निकाला जाता है कि अनंतिम उपायों के अभाव में क्षति के कारण अपूरणीय नुकसान होगा।

83. घरेलू उत्पादकों द्वारा पी ए एन की औसत उत्पादन लागत (गोपनीय), नियोजित पूंजी से प्राप्त समुचित आय, आयात शुल्क का स्तर तथा पी ए एन की औसत निर्यात कीमतों को ध्यान में रखते हुए सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की प्रथम अनुसूची के 29173500 के अंतर्गत आने वाले पी ए एन के आयातों पर मूल्यानुसार 25 प्रतिशत की दर से स्क्षोपाय शुल्क लागू करने की सिफारिश की गई थी। प्राथमिक जांच परिणाम के अनुसरण में वित्त मंत्रालय भारत सरकार दिनांक 29 जनवरी 2009 की अधिसूचना संख्या 9/2009 द्वारा भारत में किए गए पी ए एन के आयातों पर मूल्यानुसार 25 प्रतिशत की दर से स्क्षोपाय शुल्क लागू किया था।

84. जहाँ तक शुल्क के दर का संबंध है, कुछेक हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया था कि ओ एक्स से पी ए एन का उत्पादन एक एकजोथर्मिक अभिक्रिया है; उत्पादन प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न अतिरिक्त वाष्प/ऊर्जा का विपणन किया जाना चाहिए अथवा इसका अन्य उत्पादों में प्रयोग किया जाना चाहिए; एक टन ओ एक्स से 1.3 टन पी ए एन का उत्पादन किया जाता है और पी ए एन के उत्पादन में 13 प्रतिशत का लाभ होता है, जिस पर पी ए एन की लागत की गणना करते समय विचार नहीं किया गया था आदि और यह कि 25 प्रतिशत की शुल्क दर का निर्धारण करते समय इन कारकों पर विचार नहीं किया गया। उत्पादन लागत ज्ञात करते समय वास्तविक लागत पर विचार किया गया और इस प्रकार इस गणना में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदनों का ध्यान रखा गया है।

अ. समायोजन योजना:

85. घरेलू उद्योग ने पुनः रचना योजना प्रस्तुत की है जिसमें अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि करने के लिए सकारात्मक समायोजन हेतु किए जा रहे तथा किए जाने वाले प्रयासों का ब्यौरा दिया गया है।

86. आयात प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत पुनः समायोजन योजना अत्यंत विस्तृत तथा व्यावहारिक है और यह परिकल्पना पर आधारित नहीं है। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों को अभिज्ञात किया है जिससे संबंध में लागत में सुधार किया जा सकता है। घरेलू उत्पादकों ने लागत में बचत के संबंध में उनके द्वारा कार्यान्वित अनेक स्कीमों और उससे होने वाली लागत में कमी का ब्यौरा प्रस्तावकों के अन्तर् में गोपनीय रूप में दिया है।

87. घरेलू उद्योग की पुनः समायोजन योजना का प्रमुख उद्देश्य तीन वर्ष की अवधि में परिवर्तन करने को तथा संभव कम करना है। घरेलू उद्योग ने तीन वर्ष की अवधि में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने के लिए उत्पादन लागत को कम करने के उद्देश्य से कच्चे माल की लागत, परिवर्तन लागत, प्रशासनिक, वित्त आदि के संबंध में लपाय करने का प्रस्ताव किया है।

88. घरेलू उद्योग ने समुचित नेगरानी हेतु समायोजन योजना के संबंध में अर्द्धवार्षिक आधार पर वृत्त कार्यवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु सहमति व्यक्त की है।

ट. विविध

89. इजराईल सरकार का आरोप है कि उन्हें जाँच के आरम्भ होने के विषय में सूचित नहीं किया गया। इसकी जाँच करने के उपरान्त, यह पाया गया कि जाँच प्रारम्भ करने संबंधी पत्र इजराईली दूतावास को 6 जनवरी 2009 को त्वरित डाक द्वारा भेजा गया था एवं यह पत्र अभी तक बिना पावति के वापस नहीं आया है। मैसर्स ग्राडिव पैदोकैमिकल्स के अधिकारियों ने 12 फरवरी 2009 को इच्छुक पार्टी बनने हेतु आवेदन किया जो कि जाँच प्रारम्भ अधिसूचना में दी गई 21 दिन

की समय सीमा से कहीं अधिक है। उनके आवेदन को तुरन्त स्वीकार कर लिया गया एवं सभी सम्बन्धित दस्तावेज उन्हें नैसर्गिक न्याय के अनुसार सम्प्रेषित कर दिए गए।

आगे, सभी सम्बन्धित तथ्यों, जिनको प्रार्थनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया गया, को सस्तुति करने हेतु भली भाँति सज्ञान में लिया गया है। अपितु हर स्थान पर प्रार्थियों द्वारा दिए गए तर्कों को संक्षिप्ता हेतु पुनर्उत्पादित नहीं किया जा सका है।

ठ. विकासशील देश

90. विकासशील देशों से आयात के प्रतिशत की जाँच की गई। पाकिस्तान, इण्डोनेशिया व थाईलैण्ड जो कि भारत में आयात का क्रमशः 5प्रतिशत, 14प्रतिशत व 4प्रतिशत भाग सस्थापित करते हैं, के अतिरिक्त अन्य विकासशील देशों का भाग व्यक्तिगतरूप में 3प्रतिशत से कम बैठता है। अतः सम्बन्धित वस्तु का पाकिस्तान, इण्डोनेशिया व थाईलैण्ड के अतिरिक्त अन्य विकासशील देशों से आयात, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के नियम 8 (ब) के अनुरूप रक्षोपाय शुल्क को आकर्षित नहीं करता।

अ. निष्कर्ष एवं संस्तुति:

91. उपर्युक्त जाँच परिणाम के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि भारत में पी ए एन के संवर्धित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और गंभीर क्षति का खतरा बना हुआ है एवं भारत में पी ए एन के आयातों पर तीन वर्ष की अवधि के लिए रक्षोपाय शुल्क लागू करना जनहित में होगा। रक्षोपाय शुल्क की राशि ज्ञात करने, जो घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी और सकारात्मक समायोजन को सुगम बनाएगी, के लिए वर्ष 2005-06 से अप्रैल 08 - दिसम्बर 08 की अवधि से संबंधित भारत औसत उत्पादन लागत पर विचार किया गया है।

92. यह देखते हुए कि घरेलू उद्योग को समायोजित होने में तीन वर्ष की आवश्यकता होगी, यह सिफारिश की जाती है कि भारत में पी ए एन के आयातों पर तीन वर्ष की अवधि के लिए निम्नानुसार विनिर्दिष्ट दर से रक्षोपाय शुल्क लागू किया जाए, जो पी ए एन के संवर्धित आयातों के कारण गंभीर क्षति के खतरे से घरेलू उद्योग के संरक्षण हेतु न्यूनतम आवश्यक राशि है।

वर्ष	अनुशंसित रक्षोपाय शुल्क	अवधि
प्रथम वर्ष	25%	29.01.2009 से 28.01.2010
द्वितीय वर्ष	20%	29.01.2010 से 28.01.2011
तृतीय वर्ष	15%	29.01.2011 से 28.01.2012

93. चूंकि पाकिस्तान, इण्डोनेशिया एवं थाईलैण्ड के अतिरिक्त अन्य विकासशील देशों से आयात व्यक्तिगतरूप से 3प्रतिशत से अधिक नहीं पाया गया है, अतः सम्बन्धित वस्तु के उपरोक्त 3 देशों से आयात के अतिरिक्त अन्य विकासशील देशों से आयात पर सीमाशुल्क अधिनियम 1975 के नियम 8 (बी) के अनुरूप रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया जा सकता।

[फा. सं. डी-22011/32/2008]

एस. एस. राणा, महानिदेशक

MINISTRY OF FINANCE**(Department of Revenue)****(OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF SAFEGUARDS, CUSTOMS AND CENTRAL EXCISE)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 28th May, 2009

Sub. : Safeguard investigation concerning imports of Phthalic Anhydride into India—Final Findings.

G.S.R. 366(E).—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof.

A. PROCEDURE

1. An application was filed under Rule 5 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 [hereinafter referred to as "Safeguard Rules"] by (1) M/s. Thirumalai Chemicals Ltd, Ranipet Tamilnadu, (2) M/s. IG Petrochemicals Ltd Raigad Maharashtra, (3) M/s. Mysore Petrochemicals Ltd, Raichur Karnataka, and (4) M/s SI Group India Ltd., Navi Mumbai Maharashtra, seeking imposition of Safeguard Duty on imports of Phthalic Anhydride into India alleging that increased imports of Phthalic Anhydride was causing and/or threatening to cause serious injury to the domestic producers of Phthalic Anhydride in India. Having satisfied that the requirements of Rule 5, safeguard investigation against imports of Phthalic Anhydride was initiated vide notice of initiation dated 28th November 2008 published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day.

2. A copy of the notice was sent to the governments of major exporting countries through their embassies in New Delhi. A copy of initiation notice was also sent to all known interested parties listed below:

Domestic Producers

- a. M/s. Thirumalai Chemicals Ltd., Ranipet Tamilnadu
- b. M/s. SI Group India Ltd., Navi Mumbai Maharashtra
- c. M/s. IG Petrochemicals Ltd., Raigad Maharashtra
- d. M/s. Mysore Petrochemicals Ltd., Raichur Karnataka

Importers

- a. Cray Valley Resins India Ltd. Plot No. D-43 Trans Thane Creek, MIDC Indl. Area, Shirvane Navi Mumbai 410833, Maharashtra
- b. Goodless Nerolac Paints Ltd Tiruporur Road Perungudi, Chennai 600096 Tamilnadu
- c. Gargi Industries (Prop: Gargi Chem. Pvt. Ltd) Unit No. 11, D-161 Ttc Indl. Area (MIDC) off. Thane Belapur Road Dist. Thane Navi Mumbai
- d. Hindustan Insecticides Limited (A Government of India Enterprises) P.O. Rasayani, Dist. Raigad, Rasayani Maharashtra
- e. Kemrock industries & Exports Ltd., (100% EOU), Survey No. 120/2, Vadodara - Halol, Express Way, Village-Asoj, Vadodara, Gujarat.
- f. Shalimar Paints Limited, P.o. Danesh Shaikh Lane, Howrah -711 109
- g. U.K. Paints India Pvt. Ltd., Surajpur-Dadri Road, Village: Devia, District : Goutambudh Nagar Uttar Pradesh

Exporters

- a. Aekyung Petrochemical Co. Ltd, Ulsan, 106-3, Kuro-dong, Kuro-gu Seoul 152-050 South Korea, Tel : 82/2/851-6100
- b. L.G. Petrochemical, Yeochon, LG Twin Towers, 20, Yeouido-dong, Yeongdeungpo-gu, Seoul, 150-721, Korea (REP), Tel: 82-2-3777-1114
- c. Petowidada, East Java, Menara BTN 15th Floor, JL. Gajah Mada No. 1, Jakarta 10130, Indonesia. Tel: (62-21) 633 2622, Fax: (42-21) 634 2635
- d. Nan Ya Plastics Corporation, Mailiao, No. 201, Tung Hwa North Rd. Taipei, Tiawan, Tel: 886-2-2900-9141, Fax: 886-2-2902-1243
- e. UPC Technology Corporation, Linyuan & Tiapai, 5f, 20, Lane 478 Rueiguang Rd, Neihu, Taipei, Tiawn, Tel: 886-2-26575555, Fax: 886-2-26270707

Exporting Nations:

- a. The Republic of Korea, through their Embassy in New Delhi
 - b. Pakistan, through their Embassy in New Delhi
 - c. Taiwan, through their Embassy in New Delhi.
 - d. Indonesia, through their Embassy in New Delhi
 - e. Israel, through their Embassy in New Delhi
3. Questionnaires were also sent, on the same day, to all known domestic producers and importers and exporters and they were asked to submit their response within 30 days.
 4. Request to consider them as an interested parties were received from the following parties and all the requests were accepted:

- a. M/s Nimir Chemicals, 51-N Industrial Area Gulberg II, Lahore, Pakistan
 - b. Indian Plasticizers Manufacturers Association, New Delhi
 - c. Ministry of Foreign Affairs and Trade, Republic of Korea
5. Requests for an extension of time to submit their replies were made by the following parties:
- a. M/s Nimir Chemicals, 51-N Industrial Area Gulberg II, Lahore, Pakistan
 - b. Indian Plasticizers Manufacturers Association, New Delhi
 - c. Ministry of Foreign Affairs and Trade, Republic of Korea
 - d. M/s PT Petowidada, East Java, Indonesia
 - e. M/s Aekyung Petrochemical Co. Ltd, South Korea
6. After taking into account the time limits for completing the investigation within the prescribed period, requests for extension of time were allowed and the parties concerned were accordingly informed.
7. After expeditious conduct of investigation preliminary findings were issued on 1st January 2009. The provisional duties were levied at the rate of 25% with effect from 29th January 2009 vide customs notification No.9/2009-Cus dated 29th January 2009.
8. A public hearing was held on 25th February 2009, notice for which was sent on 16th January 2009. All interested parties who participated in the public hearing were requested to file a written submission of the views presented orally in terms of sub rule (6) of rule 6 of the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard duty) Rules, 1997. Copy of written submission filed by one interested party was made available to all the other interested parties. Interested parties were also given an opportunity to file rejoinder, if any, to the written submissions of other interested parties. All the views expressed by the interested parties either in the written submissions or in the rejoinders were examined and have been taken into account in making appropriate determination.
9. The information presented by domestic producers with regard to their production, sales, costs and prices, profits, and other injury parameters were verified by on-site visits to the plants of the domestic producers to the extent considered necessary. Further, the cost data has been also verified and certified by independent cost accountant. The non confidential version of verification report is kept in the public file.

B. VIEWS OF DOMESTIC PRODUCERS OF PAN IN INDIA

10. The domestic producers have stated as follows:

- a. Article 2.1 read with Rule 11(1) of the Safeguard Duty Rules provide that a Member State intending to apply a safeguard measure to imports of a product must determine whether (a) there is increase in imports of the product, absolute or relative to domestic production; (b) such increases has caused or threatens to cause serious injury to the domestic industry; and (c) domestic industry produces like or directly competitive products. Under Article XIX:1 of GATT, 1994 a Member must also determine that such increase in imports is the result of unforeseen developments and of the effect of the obligations incurred by India under the GATT.
- b. It is not disputed that PAN (product under consideration) produced by the domestic industry is like product to that being imported into India.
- c. There was a recent, sudden, significant, and sharp increase in the volume of imports in absolute terms as well as relative terms. Imports were at the level of 24092 MT during 2005-06. It went down to 14133 MT during 2006-07. Thereafter, imports increased to 31,203 MT during 2007-08 recording a growth of 121% in a single year. It went far beyond the level it was during 2005-06. Compared to 2005-06, increase during 2007-08 was 30%. Thus, in spite of the fall during 2006-07, imports increased quite significantly during 2007-08. Thus, the fall in imports during 2006-07 was only temporary and the volume of imports bounced back to much higher levels thereafter. Over and above such a significant increase in 2007-08, imports increased further during the first nine months of 2008-09. Imports went upto 29670 MT during 2008-09 (first nine months itself) recording an increase of 27%. Imports as a percentage of domestic production increased from 14% in 2005-06 to 22% during 2008-09. Imports as a percentage of production for domestic sale increased from 23% in 2005-06 to 33% during the first nine months of 2008-09.
- d. There was a sudden increase in the imports from Korea due to the collapse of the domestic market in Korea and the collapse of traditional markets like China and USA and the consequent desperation to offload the piled up stocks. Moreover, value of Korean Won dropped significantly by around 41% from 941 Korean Won per USD in January 2008 to 1326 Korean Won per USD in October 2008. Such significant a weakening of Korean Won resulted into higher export earnings for Korean producers and also acted as an incentive to reduce their prices.

- e. Production volume of domestic producers increased from 168,578 MT in 2005-06 to 201,108 MT in 2006-07 and further to 220,168 MT in 2007-08. However, inspite of such consistent increase in the past three years, production volume fell down to 134,773 MT during the first nine months of 2008-09. In terms of indexed numbers, production volumes of domestic producers increased from 100 indexed units in 2005-06 to 119 in 2006-07 and further to 131 but fell down to 80 indexed units during the first nine-months of 2008-09. During 2008-09, production during the first half year decreased by 8%. It went down by 40% during quarter III and was expected to go down to 71% during second half year. Such significant fall in the volume of production is unprecedented for the domestic industry indicating serious injury suffered by it during such a short period. Domestic industry had experienced a sharp decline in capacity utilization. In spite of the increase in installed capacity, production would fell by 18% compared to the previous year resulting into a meager capacity utilization of 68%.
- f. Domestic sales increased from 104596 MT in 2005-06 to 130895 MT during 2006-07 and further to 140272 MT during 2007-08. However, it fell down to 96181 MT during the first nine months of 2008-09. In terms of indexed numbers, Domestic sales volume increased consistently from the level of 100 indexed units in 2005-06 to 125 in 2006-07 and further to 134 units in 2007-08 but declined significantly to 92 indexed units during the first nine months of 2008-09.
- g. Market share of domestic industry was as high as 90% during 2006-07. It fell to 82% during 2007-08 due to increased imports. It further fell down to 76% during the first nine months of 2008-09.
- h. Due to loss of sales and market share, the domestic industry was forced to shut down some of their plants. The details of plant shut down were as follows:

Domestic Producer	Date of shut down	Capacity shut down
Thirumalai Chemicals	8-Oct-08	132500
SI Group	11-Oct-08	11000
IG Petrochemicals	25-Oct-08	50000 (out of 110000)
Mysore Petrochemicals	1-Nov-08	12000

- i. The plants restarted their operations subsequently. However, they were still not operating at normal capacity utilization levels achieved before the sudden increase in imports began.

- j. A large number of employees (approximately 700) have been rendered idle due to closure of the plants.
- k. Domestic prices and import prices moved in tandem as the import prices significantly affect the domestic selling prices and the domestic producers had to fix their prices based on 'import parity principle'. From a situation of loss during 2005-06, domestic industry had come out during 2006-07 itself. It made significant profits in 2006-07 and 2007-08. However, due to increased imports, from a profit level of 213.72 indexed units in 2007-08, domestic industry suffered a loss of 235.87 indexed units during the first nine months of 2008-09. For the full year, the losses would be significantly more. On a per unit basis, domestic industry earned a profit of 244.08 indexed units during 2007-08. It turned into a loss of 775.24 indexed units during the first nine months of 2008-09. Thus, domestic industry was suffering serious injury and unless protective measures were given, domestic industry would cease to exist.
- l. Adverse impact on the various economic parameters stated above clearly demonstrated the significant overall impairment in the position of the domestic industry.
- m. A sharp increase in imports of PAN resulted into loss of market share and sales of the domestic industry. The landed value of imports being significantly low in the current year has resulted into significant price underselling resulting into serious losses for the domestic industry. But for the increase in imports, there were no other factors that caused any injury to the domestic producers.
11. The domestic producers also presented a detailed re-adjustment plan. According to them, considering the limited value addition made to the raw material, scope for drastic reduction in costs did not exist in this industry. Therefore, their re-adjustment plan primarily was aimed at reducing the conversion cost to the extent possible over a three year period, though steps taken to reduce the raw material costs had also been indicated. Domestic industry assured that it would be in a position to meet import competition on its own in three years time, by implementing the re-adjustment plan.

C. VIEWS OF CHEMICAL INDUSTRIES ASSOCIATION

12. Views of Chemical Industries Association are summarized below:

- a. Chemical prices have plunged significantly in international market and consequently the prices of these commodities have dropped in Indian market due to the global crisis. PAN prices have decreased from US\$ 1,600/ton during July-August'08 to US\$ 600/ton during October'08.
- b. Indian chemical sector is facing low demand, large scale order cancellations, large inventory and stock losses.
- c. Due to the above reason, almost all medium and small companies find it difficult to sustain their operations and consequently are forced to shut down. This sector provides employment to a large number of people contributes substantial to the national economy with a large export base and is backbone of many other sectors as well.
- d. They have requested to impose a Safeguard Duty on imports of PAN for a period of four years as the chemical industry is going through one of its worst phases.

D. VIEWS OF EXPORTING COUNTRY GOVERNMENTS AND EXPORTERS

13. The views expressed by various interested parties are summarized below:

D.1. Views of Foreign Trade Administration, State Of Israel

14. The views of Government of Israel are summarized below:
- a. Copy of the application was not made available to Israeli authorities or Gadiv – an exporter from Israel causing serious procedural lapse. Only on 20 February 2009, a copy of application was made available to Gadiv upon request by their legal representative. Though India notified the Committee of Safeguards on 16 December 2008, no notification regarding the procedure was made to Israeli authorities until Mid January 2009. Israel received the notice regarding public hearing but Gadiv did not receive the same.
 - b. Although imports increased in absolute figures in the first half of 2008, it should be considered as a marginal increase. In annual figures, increase was from about 31.5 ktpa to about annualized 45ktpa. This constitutes only 5.5% of the capacity of the Indian manufacturers. Gadiv did not increase its imports to India.

- c. There were several fluctuations in import volume over the period beginning from 2004-05 until 2008-09. Taking 2004-05 as the base year, the imports increased to 24,092 MT in 2005-06, then declined to 14,133 MT in 2006-07 and again increased to 31,441 MT in 2007-08 and reached 18,655 MT in the first five months of 2008-09. Due weight has not been given to these statistics in the investigation and it is impossible to substantiate a claim for the imposition of a safeguard duty as required by Article 2 of the safeguard Agreement and of Article XIX: 1 of GATT and of Article 8B (1) of India's Customs Tariff Act, 1975, that there be "increases quantities" of imports in order to impose a safeguard duty.
- d. There was a sharp decrease i.e. almost 50% in imports of PAN from a quarterly rate of about 11.2kt for the first half of 2008-09 to 5.7kt per quarter in the third quarter of 2008-09. Most relevant and recent figures showed a decrease in import volumes – a fact that contradicts the basic finding of the investigation.
- e. A large portion of the injury suffered by manufacturers in this industry, all over the world, was attributable to the devaluation of stocks in October and November 2008. This was due to the dramatic fall in the prices of OX and PAN. The stocks of 20,000 MT of OX represented quantity of less than one month's consumption that was customary operational stocks.
- f. There was no dramatic fall in market share of the domestic industry vis-à-vis imports so that it can be concluded that increased imports have caused serious injury. However, the domestic industry has suffered significant loss in the export sales in 2008-09.
- g. The real difficulties of the Indian PAN producers were caused by growing competition in their export markets. These difficulties should be attributed to the global economic recession and not to changes in import pattern to India.
- h. Article XIX of GATT, Article 2 of the Safeguard Agreement and Article 8B (1) of India's Customs Tariff Act 1975 requires that any product being imported should be "in such increases quantities and under such conditions as to cause or threaten serious injury to domestic producers". This second requirement clearly refers to "conditions" other than the increased quantities, which is mentioned in the first requirement. We were unable to find any such finding in the preliminary findings.

15. Government of Israel requested that full opportunity be afforded to Gadiv and the Israeli Government to defend their export interests prior to any decision regarding imposition of a safeguard duty.

D.2. Views of M/s. Gadiv Petrochemical Industries Ltd. Israel

16. The views of M/s. Gadiv Petrochemical Industries Ltd., Israel are summarized below:

- a. There were no "increased imports", but rather marginal increase in imports as compared to the large domestic production capacity.
- b. Temporary closure of plants and cutting of production due to lack of profitability were well known practice in this industry. Especially in a fragile era, PAN producers all over the world were temporarily closing plants and cutting production. Producers of PAN all over the world were undergoing a tough time, since the prices of OX had spiraled vigorously and thus adversely affecting the profitability of the producers. Hence, no serious injury to domestic industry had been caused. Due to the sharp fall in PAN prices in November 2008, other PAN plants all over the world were shut down or had cut their capacity utilization significantly. As per the knowledge of Gadiv, PAN plants had been closed in Turkey, Spain and Romania for a period of two to three months during the third quarter 2008-09.
- c. No unforeseen circumstances demonstrated. The developments in the PAN market are commonplace phenomena that are part of the ordinary economic business cycle of fluctuations in prices and periods of macro-economic recession.
- d. The investigation has not demonstrated what the conditions of the importation are as to cause or threaten to cause serious injury. An analysis of the prices of the imports and of other pertinent selling conditions does not support the conclusion that it is the imports that are to blame for the troubles of the domestic industry. No causal link exists between alleged increase in imports and injury to the domestic industry.
- e. Safeguards Agreement requires that the increase in imports must have recent enough, sudden enough, sharp enough and significant enough. However, increase in imports constituted only 5.5% or 2.15% of the total capacity of the Indian domestic manufacturers depending upon how Gadiv calculates it.
- f. Turkey was a large net importer of PAN (consumption is more than twice than local production capacity) and nevertheless they closed PAN manufacturing facilities for

the most of the third quarter of 2008-09. However, all the Indian plants started manufacturing even before the imposition of the provisional safeguard duty.

- g. India's industry had been a traditional net exporter of PAN and the real calculation showed that its difficulties arose from decreasing sales in its export market. This together with the global recession and its other effects, such as devaluation of stocks, were the real reasons for the difficulties claimed to have beset the Indian industry. The figure for the first half of 2008-09 showed a decrease of 29% in exports. The fall in export combined with the desire to monopolize the market and to dictate the terms in the market led the domestic industry to intentionally attribute the fact of 70.5% of their capacity lying idle to the mere increase of 5% in the imports.
- h. The stocks that were piled as mentioned in the preliminary findings were very usual to this industry. The stocks of the raw material i.e. 20,000 MT of OX represented a quantity of less than one month consumption by local industry. The stocks of the finished product i.e. 9,500 MT of PAN represented a quantity of less than two weeks of sales. These were considered ordinary and customary operational stocks in the petrochemicals industry.
- i. Gadiv did not undercut the prices of Indian producers, since most of its PAN exports into India were done under contracts based on the raw material price plus a premium which represented manufacturing costs and reasonable profits.
- j. The adjustment plan submitted by the domestic industry was a shallow and very general plan, which did not include real significant measures for increasing efficiency or achieving any other "adjustment" or improved competitiveness.
- k. Gadiv's imports should be excluded as there was no causal link between Gadiv's exports to India and any serious injury to the domestic industry. In view of the different conditions of Gadiv's sales to India compared to those possibly found in relation to other exporters of PAN to India, the different treatment of Gadiv's sale is not in violation of Article 2.2 of Safeguard Agreement. This is supported by the WTO Appellate Body's finding in the US - Line Pipe Safeguard case where it was held that if the US had adduced sufficient evidence to show that imports from countries other than Mexico and Canada had caused a serious injury to the domestic industry, imports from these two countries could have been excluded from the application of safeguards.

- l. Other factors that caused injury to the domestic industry were not considered in the preliminary findings.
- m. Imposing safeguard duty might help the Indian PAN manufacturers, but will injure other Indian industries, mainly those importing PAN, and would also injure the end users of products. It might also injure Indian exporters, as it might lead to counter measures by other countries.
- n. Article 5 of Agreement on Safeguard requires that the measure taken will be such as needed for repairing the serious injury to local industry. Since the profit margin of PAN manufacturers was clearly less than 25%, the safeguard measure of 25% would totally eliminate imports of PAN into India and would be contrary to object of the imposition of safeguard measure.

D.3. Views of the Government of Pakistan

17. The views of the Government of Pakistan are summarized below:

- a. The increase in imports was too marginal to cause 'serious injury' to the domestic industry. Besides the increase imports does not qualify the tests of 'recent enough', 'sudden enough' and 'significant enough', as stipulated by the panel in the case of 'US Wheat Gluten Safeguards'.
- b. Initiation of the investigation was based on unrealistic assumptions, an important assumption being the stated increase in imports and the assumed closure of the domestic industry. Indian manufacturing units producing PAN had since restarted their production and started feeding the domestic market as well as exporting their produce. Hence, the argument about serious injury being caused to the domestic industry was not tenable.
- c. Decreased in demand is more than the increase in the imports. Therefore, the injury cannot be attributed to the increased imports.
- d. The imports from Pakistan constitute only 0% to 8% of total imports and 0% to 1% of domestic production and such insignificant quantity of imports from Pakistan cannot cause serious injury to the domestic Indian industry.
- e. The product PAN is a down stream product of crude petroleum. The changes in the prices of crude petroleum may affect the prices of related product and it is well

known fact that the prices of crude has fallen since July 2008. In such a scenario, Indian industry has to suffer injury even if there are no imports. Therefore, the domestic industry has suffered injury due to the fall in the prices of petroleum products.

- f. The injury to the domestic industry is caused due to reduction in duty from 20% to 7.5%, global slow down in demand and reduction in prices of PAN and Orthoxylene.
- g. Price undercutting given in the petition is not correct as the indexed value of landed value of imports moves in line with the indexed value of domestic selling prices.

D.4. Government of Korea

18. The Government of Korea has raised its argument with respect to two aspects :-

- i. Unforeseen developments
 - ii. Causation and non-attribution
- a. Slow down in economic growth or even a recession, are part of normal economic cycle and therefore do not constitute unforeseen development. However, a prolonged economic depression may, depending on the specific circumstances, constitute an "unforeseen development".
 - b. Fluctuations in the prices of traded goods, including commodities, do not constitute unforeseen developments as prices for any traded goods are not fixed for forever. Moreover, the Indian Investigating Authority has not provided an explanation, with reference to historical data, to support its conclusion that variations in the OX or PAN Price constitute "unforeseen developments".
 - c. Indian Investigating Authority has not provided data to support that the Korean domestic market and the Chinese export market have collapsed. According to public available information from Chemical Market Research Inc., total domestic demand in Korea was 226,515 MT in 2008 which is almost equal to 226,901 MT in 2007.
 - d. Korean exports of PAN to China as a percentage of total Korean PAN exports remain constant between 2007 and 2008 at 23-24%.
 - e. Korean exports to India has increased by only 1,288 MT in 2008 which is less than a tenth of the increase in Indian imports i.e. 13,335 MT on an annualized basis.

- f. Movements in currency exchange rates are a commonplace occurrence in international economic relations. Hence, they are foreseeable and do not constitute an "unforeseen development" within the meaning of Article XIX: 1 (a).
- g. Indian Investigating Authority did not identify the countries in which recession has taken place and how the recession and its "unseen" nature, has led to increased imports of PAN to India.
- h. Indian Investigating Authority has not properly assessed the injurious effects of factors other than increased imports.
- i. Loss of export market of the Indian industry and relative inefficiency of the Indian industry vis-a vis the industry in other countries have caused injury to the domestic industry.

D.5. Nimir Chemicals Pakistan Limited, Pakistan

19. Views of Nimir Chemicals Pakistan Ltd are summarized below:

- a. Full year estimates of domestic production of PA are based on realistic assumptions. The applicants have assumed 100% increase in the imports of PA and production of non participant producer in the second half of 2008-09 whereas they assumed only 37% increase in the applicants' production.
- b. Summer is the peak season for the sale of PAN and import data of first six months 2008-09 (April to Sep) pertains to peak season of PAN. Hence, the assumption that it will be double by the end of the year is unrealistic.
- c. The total decrease in imports for FY 2008-09 is 67,470 MT which is more than the increase in imports i.e. 13,335 MT. Hence, the injury suffered by the domestic industry is mainly attributed to the fall in demand rather than increase in imports.
- d. They have admitted that the PAN market has crashed very sharply over few months and the Indian applicants are not the only victims of fall in prices. Everyone around the globe was affected by this factor. They have also lost lot of money due to sharp and sudden fall in the international markets.

D.6. Government of Indonesia

20. Views of Government of Indonesia are summarized below:

- a. Collapses of domestic market in Korea and collapse of traditional market like China & USA along with the South Korean Banking industry crisis and devaluation of Korean Won vis-a-vis does not justify the initiation of safeguard investigation concerning imports of PAN.
- b. Japan, Germany, Italy, China, Singapore, Thailand, Turkey and USA have been excluded from the initiation of this Safeguard investigation. However, the Para 2 of Article 2 of Agreement on safeguard stipulates that safeguard measures shall be applied to a product, being imported irrespective of its resources.
- c. As per Para 1 of Article 2 of Agreement on safeguard, a member may apply for a safeguard duty only if such product is being imported into the territory in such increased quantities, absolute or relative to domestic production. It is not possible to have a drastic increase of PAN either absolute or relative when the anti-dumping duty had been imposed on PAN product during 2000-2005.
- d. Percentage of the imported PAN is insignificant as compared to the domestic production.
- e. The domestic industry capacity utilization has increased from 77% in 2005-06 to 86% in 2006-07 and 91% in 2007-08. Hence, the domestic industry has not suffered any serious injury.
- f. The domestic industry is not suffering any serious injury as its production has increased from 191,636 MT in 2005-06 to 222,959 MT in 2006-07 and continues to increase to 244,429 MT in 2007-08.
- g. Shut down of the domestic plants is contradictory as the domestic production is increasing and it is not possible to increase the production while most of the plants were closed down.
- h. During the 2005-06, India's anti-dumping authority had imposed Anti-Dumping duty against imported PAN originating from Indonesia. It is well known fact that anti-dumping duty is a measure aim to recover the domestic industry from the injury suffered from the dumping practice. The domestic industry must have recovered from

the injury suffered with the imposition of anti-dumping duty. Therefore, the safeguard measures submitted by India's domestic PAN industry are unacceptable.

D.7. PT. Petrowidada, Indonesia

21. Views of PT Petrowidada, Indonesia are summarized below:

- a. The PAN price increased to US\$ 1,500/Mt in August 2008 and plunged to US\$570/MT in November 2008 is actually due to the drastically fall of the crude oil prices. This fall in the prices is a result of the Global economy crisis that started in the US which resulted to the financial crisis. Due to this the business has been effected through out the world.
- b. Most of the PAN producers in Asia have suffered hug losses due to the fall in the prices of OX and PAN in the short period. As a result of which, most of the producers have shut down their plants. Therefore, import volumes as claimed by the petitioner are incorrect with respect to the determination of the annualized figures for 2008-09.
- c. The domestic demand of PAN has increased in 2007-08. As, the domestic production could not satisfy the domestic demand, the domestic PAN users have to import the PAN. Hence, the imports have increased in 2007-08.

E. VIEWS OF IMPORTERS/USERS INDUSTRIES

E.1. Views of Indian Plasticizers Manufacturers Association ("IPMA")

22. The views of IPMA are summarized below:

- a. Petitioners had not made the manufacturers of unsaturated polyester resin, CPC, phthalate plasticizers and IPMA as interested parties in the application.
- b. One tone of OX produced 1.13 tons of PAN leading to a gain of about 13% in the production of PAN. Price of 1 MT of OX should be compared to the price of 1.13 MT of PAN. This factor had not been considered in the application. Excess steam/energy generated during the exothermic reaction of producing PAN which was either marketed or used for other products had been suppressed in the application.

- c. After plasticizer was de-reserved recently from SSI Sector, the bigger manufacturers of PAN were eying for this sector.
- d. The world over including India, the value addition in converting the raw material into plasticizers is US\$50 per tonne. With such a low value addition any increase in the raw material price will be difficult to be absorbed by user industry. Thus any imposition of safeguard duty is against public interest as it will lead to closure of plasticizer industry and consequently PAN industry itself.
- e. There was no significant increase in imports as the current imports were at the same level at which it was in 2005-06 and no unforeseen developments leading to increased imports.
- f. India's PAN industry was a traditional net exporter of PAN and the demand of PAN in 2008, had been lower worldwide on account of crash in the prices of crude from 150 Dollars to 40 Dollars as buyers were just waiting for prices to get stabilized. On account of lesser demand overseas, exports sale of petitioners went down causing injury to them. Therefore, any shut down during the third and fourth quarter of 2008 was not specific to the particular product of Petitioner Company.
- g. The injury of Indian PAN Industry was basically attributable to global recession and falling crude prices which has affected everybody and no way attributable to increased imports.
- h. Further Asian Paints, who had not joined the Safeguard Application accounted for about 15% of the total local production and it sold two third of its production besides captive consumption. They had a capacity utilization of 96% in 2008-09 as compared to 87% in 2006-07.
- i. A number of factors showed no injury as described below:
 - i. Capacity utilization in 2008-09 was at the same level as that of 2005-06;
 - ii. Share of domestic production in 2008-09 was at the same level as that of 2005-06;
 - iii. Domestic production in 2008-09 had shown significant growth when compared to 2005-06;
 - iv. Petitioners were continuously earning profits;
 - v. Employees were not idle for any significant period of time;

- j. The applicants in conspiracy with each other in a planned manner have shut down their plant in the month of October 2008 not on account of lack of orders rather to achieve twin objectives of (a) carrying out annual maintenance; and (b) justifying the safeguard application.
- k. Production of PAN in 2008 had been lower worldwide on account of crash in the prices of crude as buyers were just waiting for prices to get stabilized.
- l. The drop in the international prices of PAN in 2008-09 was not on account of price undercutting rather it was due to the lower prices of O-xylene. The differential between O-xylene and PAN has always remained positive and the same existed during rise and fall of crude prices.
- m. As crude prices fell from USD 150 to USD 40, petrochemical based products including PAN also went down by 50% to 60%. The prices of plasticizers had also fallen accordingly. The members of IPMA were also incurring losses. The balance sheets showed that during Sep-Dec 2008, there were huge losses compared to profits of previous months for user industry. This proved that September 2008 onwards was bad not only for petitioners but also for everybody including the members of IPMA as it was on account of falling crude prices and global recession.
- n. The claim of the domestic industry with regard to unforeseen developments of collapse of domestic market in Korea and traditional export market of China and USA and the consequent desperate offloading of piled up stocks was not substantiated by evidence. Korean selling prices were higher than the prices of exports from Israel, Taiwan, Indonesia and Pakistan.
- o. The domestic industry had claimed that unprecedented market recession in various countries led to increased import of PAN into India. Recession could not be an unforeseen development. Recession was a part of market oriented capitalist economy. Recession was not specific to PAN rather it had engulfed every product throughout the world.
- p. The increase in imports was not on account of obligations incurred by India. Import duty on PAN came down drastically from 30% in 2002-03 to 7.5% in 2007-08. The reduction came into effect on 1.3.2007 and industry adjusted well and there was no problem up to September 2008. The current problems could not be on account of obligations of India under the treaty and thus there was no case for imposition of safeguard duty.

- q. No viable and creditable restructuring plan had been presented. When their expenses were mere 12-13%, they would not be in a position reduce their costs to the extent of safeguard duty and become competitive with imports.
- r. Imposition of safeguard duty of 25% was highly disproportionate.

F. EXAMINATION AND FINDINGS

23. I have carefully gone through the case records and the replies filed by the domestic producers, users/importers, exporters and exporting government. Submissions made by the various parties and the issues arising therefrom are dealt with at appropriate places in the findings below.

F.1. Product Under Investigation and like or directly competitive article:

24. In the preliminary findings, product under investigation was defined as follows:-

"The product under investigation is Phthalic Anhydride falling under heading 2917.35.00 of the First Schedule to the Customs Tariff Act 1975.

25. No interested party raised any issue with regard to the product under investigation. Therefore, it is confirmed that the product under investigation is "Phthalic Anhydride" falling under heading No. 2917.35.00 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975.
26. Phthalic Anhydride (PAN) is the principal commercial form of Phthalic acid. It is a white crystalline solid, used to manufacture synthetic resins, which act as binders in paint products. The chemical formula of PAN is $C_8H_4O_3$. PAN is produced by the catalytic oxidation of OX with air or by the catalytic oxidation of naphthalene. OX is the preferred feedstock. The process entails passing OX through a reactor, which is an arrangement of tubes of clay or porcelain rings coated with a catalyst (Vanadium pentoxide or titanium oxide). The feedstock OX and the oxygen in air react over a fixed bed catalyst to form PAN. The product is polished in a post-reactor to reduce the level of impurities, solidified as sublimate and subsequently molten off in switch condensers. The product is finally flaked and taken out in the form of white or pale yellow crystals. The primary use of PAN is as a chemical intermediate in the production of plastics from vinyl chloride. Phthalate esters, which function as plasticizers, are derived from PAN. Phthalate plasticizers are used for the production of flexible PVC products such as cables, pipes

and hoses, leather cloth, shoes, film for packaging etc., PAN has another major use in the production of polyester resins and other minor uses in the production of alkyd resins used in paints and lacquers; certain dyes, insect repellents and polyester polyols for polyurethanes. Besides, it is also utilized as a rubber scorch inhibitor and retarder.

27. No differences in the production process, characteristics or end-uses between imported PAN and domestically produced PAN were raised by any of the interested parties during the course of this investigation. Therefore, it is held that domestically produced PAN falls under the ambit of like or directly competitive in all respects to the imported product under investigation and that the domestically produced PAN is a like article to the imported PAN within the meaning of Rule 2(e) of Safeguard Duty Rules 1997.

F.2. Domestic Industry

28. Section 8B(6)(b) of the Customs Tariff Act 1975 defines domestic industry as follows:

(b) *"Domestic industry" means the producers –*

- (i) *as a whole of the like article or a directly competitive article in India; or*
- (ii) *whose collective output of the like article or a directly competitive article in India constitutes a major share of the total production of the said article in India.*

29. As per the records of the case, there are five domestic producers of PAN in India namely (1) M/s. Thirumalai Chemicals Ltd., (2) M/s. IG Petrochemicals Ltd., (3) M/s. Mysore Petrochemicals Ltd., (4) M/s. S I Group India Ltd., and (5) M/s. Asian Paints Ltd. The application was made by the four producers named (1) to (4) above. The fifth producer namely, Asian Paints Ltd. Supported the petition. The four applicant producers together accounted for 85 % to 90% of total production of PAN in India during the period 2005-06 to 2008-09. Thus, the collective output of the applicant producers constituted a major share of the total production of PAN in India. Further, no claim has been made by the interested parties against the applicants being the domestic industry. Therefore, it is held that the four applicant domestic producers constitute and represent the domestic industry within the meaning of required and defined under Sec 8B (6) (b)(iii) of the Safeguard Duty Rules 1997.

F.3. Increased imports:

30. In the notice of initiation, reliance was placed on imports data as per DGCIS and IBIS. DGCIS data has been used for the period 2005-06, 2006-07 and April'07-Dec '07. IBIS

data has been used from January 2008 to September 2008. The import data has been updated up to December 2008 using DGCIS data up to Oct' 2008 and IBIS data from Nov'2008 to Dec'2008. The period has been limited to the month of December 2008, as preliminary findings were issued on 1st January 2009. Further, a reasonably longer period has been considered to even out the effect of temporary fluctuation and seasonal effects, if any.

31. **Absolute increase in imports:** On the basis of the data compiled, as shown below, it has been found that the imports have increased by 117% from 14133 MT in 2006-07 to 30613 MT during Apr'08-Dec'08.

Year	Source of data	Qty imported in MT
2005-06	DGCIS	24,092
2006-07	DGCIS	14,133
2007-08	DGCIS	31,203
2008-09 (up to Dec 2008)	Up to Oct '08 DGCIS + Nov' 08	30,613
2008-09 Annualized	-Dec'08 IBIS	40,817

32. Year on year comparison showed that imports during the first nine months of 2008-09 increased by 28% over the imports during the corresponding period of the previous year as shown in the table below:

Year	Source of data	Qty imported in MT	Index
Apr'07 - Dec'07	DGCIS	23,993	100
Apr'08 - Dec'08	Upto Oct '08 DGCIS + Nov' 08 - Dec'08 IBIS	30,613	128

33. **Relative increase in imports:** Imports as a % of total domestic production was 14% in 2005-06. It decreased to 7% in 2006-07 but regained back to 14% in 2007-08. From this level, imports during the first nine months of 2008-09 reached 23% of the total domestic production indicating a significant increase in relative terms as shown in the table below:

Year	Qty imported in MT	Index	Total Domestic production (MT)	Imports as a % of Total Domestic production
2005-06	24,092	100	168,578	14%
2006-07	14,133	59	201,108	7%
2007-08	31,203	130	220,168	14%
2008-09 (up to Dec 2008)	30,613	127	134,773	23%

34. **Intervening trends in imports:** Imports were 24,092 MT during 2005-06. They went down to 14,133 MT during 2006-07. However, import volumes bounced back and reached a level of 31,203 MT during 2007-08. Imports during 2007-08 were 30% higher than the imports of even 2005-06. In view of the same, imports during 2006-07 represented a temporary fall. The analysis of increase in imports was compared taking 2005-06 as the base year. The increase in imports during 2008-09 was also compared to the imports during 2007-08 for the purposes of determining whether there was increase in imports.
35. Import during 2007-08 was itself 30% higher than the imports made during 2005-06. Over and above this increase, imports during the first nine months of 2008-09 represented 98% of imports made during the full year 2007-08. On an annualized basis, imports during 2008-09 represented 130% of imports made during 2007-08.
36. In view of the same, it is held that there was increase in imports in absolute and relative terms and that the increase in imports was recent enough, sudden enough, sharp enough and significant enough.

F.4. Reasons for increased imports:

i. Unforeseen developments

37. The reasons for the increase in imports, as gathered from the case records and evidence presented by interested parties are summarized below:
- a. All the interested parties have unanimously stated that the current recession in global economy affected almost all the sectors of the industry around the globe. Such a global recession of this magnitude was, in fact, unforeseen.

- b. A global financial crisis was triggered by US sub-prime crisis in 2008 which was also unforeseen. With the onset of global financial crisis during the first quarter of 2008, prime producers of PAN lost their traditional markets in USA and China. The situation was further aggravated with deepening financial crisis in South Korea. Overseas investors sold a net 31 trillion Won (\$23 Billion) of South Korean stocks during 2008. Korea's money market was also showing "signs of stress" as funding for banks remains a challenge. The value of Korean Won dropped around 41% - from 941 Korean Won per USD in January 2008 to 1326 Korean Won per USD in October 2008. Due to such weakening of Korean Won, the export earnings of Korean exporters increased and this gave them an incentive to reduce their prices. These developments were unforeseen.
 - c. China and USA were the major markets for Korean PAN and most downstream product industries. Korean PAN Industry suffered a collapse between July 08 and Nov 08. The Chinese off take started slowing down from March 2008 onwards. Chinese offtake was expected to pick up after the Beijing Olympics but it did not happen as all the user chemical units were asked to shift out of the Yangtze valley. Restarting of chemical units was also adversely affected by the global economic crisis, especially slowing down of US economy. These developments were clearly unforeseen. Korean Export statistics also showed that the exports of PAN to china had decreased to 1500-2000 MT during August-September-October 2008 as compared to 4000 to 5000 MT per month during January and February 2008.
 - d. In addition to Korea, Taiwan which faced the same situation and partly Indonesia, too, were forced to divert their PAN to other markets. This change in the market outlook for Taiwanese producers was also unforeseen.
 - e. Pakistan started exporting PAN to India in 2007-08. They exported 1673 MT during 2007-08 and during the current year, imports from Pakistan increased to 3341 MT (as per DGCIS data for April-Oct'08 and IBIS data for Nov'08 to Dec'08). Such huge imports from Pakistan were not foreseen.
 - f. Indian market was significantly large enough for the producers in the affected countries looking for alternate markets.
38. Some of the interested parties had stated that economic recession was not to be treated as 'unforeseen' as recession would be a part of any normal business cycle. Recession may be a part of a capitalist economy but the great depression of 30's brought changes in capitalist philosophy and economic theory to avert recession to a very large extent. There

have been various instances of recession affecting certain economies at certain time, but the time and magnitude of recession always remained unpredictable. Further, the recession of this magnitude which engulfed the entire world economy and put the economy in negative growth could not have been predicted and foreseen. Had it been possible to foresee the current crisis, the crisis could have been averted. As far as requirement of meeting WTO obligations are concerned, it requires whether such a recession was foreseen? Considering the timing and severity of the recession cutting across all industries and all countries with varying magnitude, the current recession was clearly unforeseen.

39. Some interested parties argued that PAN manufacturing industry around the globe is facing similar problems. PAN manufacturing plants have been closed down in Turkey, Spain, Romania, etc and the problem is not limited to India alone. Such arguments underline the fact that the recent developments in the global economy are unforeseen globally and various economies are getting affected, to varying degrees.
40. In view of the above, it is held that the increase in imports of PAN into India was as a result of unforeseen developments stated above.

ii. Obligations incurred under GATT

41. PAN is one of the products in respect of which India has provided tariff concessions pursuant to Article II of GATT 1994
42. Some of the interested parties have argued that the reduction in import duties to the current level of 7.5% took place in 2007 and the domestic producers did not face any problem till later part of 2008 and accordingly, the current problems faced by the domestic producers could not be linked to tariff reduction.
43. So long as India has incurred certain obligations under GATT 1994, including tariff concessions on the product under investigation, it may be presumed that the increase in imports was one of the effects of obligations so undertaken. Thus, it is held that imports increased as a result of unforeseen developments and of the effect of obligations incurred by India under GATT 1994.

F.5. Serious Injury or Threat of Serious Injury:

44. **Production:** For the purpose of analysis of economic parameters, same period as that for import has been considered. Domestic production volumes increased from 168578 MT

in 2005-06 to 201,108 MT in 2006-07 and further to 220,168 MT in 2007-08. However, during the first nine months of 2008-09, production was only 134,774 MT. On an annualized basis (for the purpose of comparison), it would be 179,697 for 2008-09 as compared to 220,168 during the previous year recording a fall of 18%.

Year	Qty imported in MT	Qty imported (index)	Total Domestic production (MT)	Total Domestic production (Index)	Imports as a % of Total Domestic production
2005-06	24,092	100	168,578	100	14%
2006-07	14,133	59	201,108	119	7%
2007-08	31,203	130	220,168	131	14%
2008-09 (upto Dec 2008)	30,613	127	134,773	80	23%
2008-09 Annualized	40,817	169	179,697	107	23%

45. The production has decreased by 26% from 101,515 MT during Apr'08 – Sept'08 to 8,284 MT during Oct'08 – Dec'08 whereas the imports as a % of total domestic production has increased from 22% during Apr'08 – Sept'08 to 25% during Oct'08 – Dec'08.

Period	Qty imported in MT	Total Domestic production (MT)	Imports as a % of Total Domestic production
Apr'08 - Sept'08	22,329	101,515	22%
Oct'08 - Dec'08	8,284	33,258	25%
Total	30,613	134,773	23%

46. Some interested parties have argued that export production had been included in total production. However, for this investigation, from total production quantity, export sale quantity was deducted to arrive at the 'production for domestic market'. Only the production for domestic market figures so determined has been used in this analysis.
47. **Capacity Utilization:** Capacity utilization increased from 77% in 2005-06 to 86% in 2006-07 and to 91% in 2007-08 but it significantly decreased to 79% during April'2008 – Sept'2008. The capacity utilization further declined to 49% during Oct' 2008 – Dec'2008. The domestic industry has to cut down its production due to the increase in imports:

Year	Installed Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity utilization
2005-06	220,000	168,578	77%

2006-07	233,000	201,108	86%
2007-08	241,000	220,168	91%
Apr'08 - Sept'08	129,000	101,515	79%
Oct'08 - Dec'08	68,250	33,258	49%
2008-09 (upto Dec 2008)	197,250	134,773	68%

48. **Productivity:** The domestic producers have state of the art plant and there is no adverse impact on productivity.

49. **Sales:** Domestic industry's sales increased from 104,596 MT units in 2005-06 to 130,895 MT in 2006-07 and further upwards to 140,272 MT during 2007-08. However, during Apr-Sept 2008, domestic sales went down to 71,148 MT and further to 25,033 MT during Oct - Dec 2008, recording a significant fall of 9%. On an annualized basis (for the purpose of comparison), it would be 128,241 MT for 2008-09 as compared to 140,272 MT during the previous year recording a significant fall of 9%.

Particulars	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr-Sept)	2008-09 (Oct - Dec)	2008-09 Apr-Dec	2008-09 Annualized
Domestic Sale (MT)	104596	130895	140272	71148	25033	96181	128241
Indexed	100	125	134	68	24	92	123

50. **Demand and Market Share:** Demand in India for PAN was 128,688 MT in 2005-06. It increased to 145,028 in 2006-07 and further went up to 171,475 in 2007-08. It came down to 126,794 during the first nine months of 2008-09. On an annualized basis, demand for 2008-09 would be 128,241 MT recording a reduction of about 2%. In such a marginally shrinking market, share of imports increased from 18% in 2007-08 to 24% during 2008-09. Correspondingly, share of domestic industry went down from 82% in 2007-08 to 76% during 2008-09.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr-Sept)	2008-09 (Oct - Dec)	2008-09 (April to Dec)	2008-09 Annualized
Imports	MT	24092	14133	31203	22329	8284	30613	40817
Sale of Domestic Industry	MT	104596	130895	140272	71148	25033	96181	128241

Consumption in India	MT	128688	145028	171475	93477	33317	126794	169059
Consumption in India	Indexed	100	113	133	73	26	99	131
Imports	%	19%	10%	18%	24%	25%	24%	24%
Domestic Industry	%	81%	90%	82%	76%	75%	76%	76%

51. **Stocks:** Closing stock quantity decreased from 100 in 2005-06 to 95 in 2006-07 and it went down further to 82 in 2007-08. The decrease in the past three years was attributable to increasing domestic sales. Closing stocks decreased to 67 as at the end of December 2008. This could not be as a result of increase in domestic sales as there was a fall in domestic sales. On examination, it is observed that the fall in stocks was due to a fall in production quantities. It is also observed that closing stock as a percentage of sales quantity increased from 4.43 in 2007-08 to 5.29 as of December 2008.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (April to Dec)
Closing stock	MT	****	****	****	****
Closing stock	Indexed	100	95	82	67
Inventory to sales ratio	Ratio	****	****	****	****

52. **Employment:** A large number of employees (approximately 700) have been rendered idle due to closure of the plants for significantly long periods of time during October-December 2008.
53. **Domestic selling Prices:** The domestic industry stated that they were forced to sell PAN at low prices in the domestic market keeping in view the landed price of imported PAN. As the landed value of imported PAN was very low, domestic industry suffered huge losses in effecting domestic sales. It may be seen that the domestic selling prices increased from 100 during QTR I of 2008-09 to 114 during QTR II. However, the average selling prices plummeted to 81 during QTR III of 2008-09 as shown in the table below:

		QTR I	QTR II	QTR III
Average Domestic Selling Price	Rs. PMT	****	****	****
	Index	100	114	81

54. The monthly selling prices during the first nine months of 2008-09 of all the four applicant producers were examined individually. During April 2008, prices of all the four producers ranged between Rs. ***** PMT to Rs. ***** PMT. When the prices fell, some producers had to drop the prices significantly more than others. During December 2008, while one producer sold at Rs. ***** PMT, another one sold at Rs. ***** PMT. On an overall basis, trends of prices of individual domestic producers were similar in the sense that the prices moved up in QTR II of 2008-09 and went down during QTR III of 2008-09.

Particulars	IGPL	MPCL	TCL	SI Group	Average	Indexed
Apr-08	*****	*****	*****	*****	*****	100
May-08	*****	*****	*****	*****	*****	102
Jun-08	*****	*****	*****	*****	*****	116
Jul-08	*****	*****	*****	*****	*****	126
Aug-08	*****	*****	*****	*****	*****	125
Sep-08	*****	*****	*****	*****	*****	111
Oct-08	*****	*****	*****	*****	*****	103
Nov-08	*****	*****	*****	*****	*****	84
Dec-08	*****	*****	*****	*****	*****	70

55. Domestic selling prices were compared to the landed values of imported PAN. During 2005-06, domestic prices were 100 units lower than the landed value of imports. During 2006-07 and 2007-08, landed value of imports were marginally higher than domestic selling prices. During the first nine months of 2008-09, landed value of imports were lower than the domestic selling prices by 16.07 Units. It is observed that the domestic selling prices were to be brought down to the level of the landed value of imported goods in order to keep sales moving. Otherwise, domestic industry would not have been able to achieve the reported domestic sales.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (April to Dec)
Domestic sales realisation	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Landed Value of imports	Rs./MT	48312	57563	56531	58157
Difference	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Difference (Indexed)		(100.00)	(38.35)	(6.82)	16.07

56. The price trends of PAN were examined in line with the movement in the costs. Since O-Xylene constituted a significant portion of the total cost, prices of O-xylene were examined.

Particulars	IGPL	MPCL	TCL	SI Group	Consolidated	Indexed
Apr-2008	****	****	****	****	****	100
May-2008	****	****	****	****	****	105
Jun-2008	****	****	****	****	****	114
Jul-2008	****	****	****	****	****	136
Aug-2008	****	****	****	****	****	141
Sep-2008	****	****	****	****	****	135
Oct-2008	****	****	****	****	****	122
Nov-2008	****	****	****	****	****	99
Dec-2008	****	****	****	****	****	64
Jan-2009	****	****	****	****	****	77
Feb-2009	****	****	****	****	****	87
Mar-2009	****	****	****	****	****	96

57. It is observed that the prices of PAN fell far more steeply as compared to the fall in the prices of raw materials.
58. In addition, domestic selling prices of PAN were compared to the cost of sales. The cost of sales increased from 140 units during the first six months of FY 2008-09 to 186 units during Quarter III of FY 2008-09. While, during the same time, domestic sales realization decreased from 141 units to a mere 104 units. The prices were highly un-remunerative and suppressed to a significant degree.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr to Sept)	2008-09 (Oct to Dec)	2008-09 (April to Dec)
Cost of sales	Rs./MT	*****	*****	*****	*****	*****	*****
Cost of Sales	Indexed	100	119	116	140	186	148
Sales Realisation	Rs./MT	*****	*****	*****	*****	*****	*****
Sales Realisation	Indexed	100	126	126	141	104	131
Profit/Loss	Rs./MT	*****	*****	*****	*****	*****	*****
Profit/Loss	Indexed	(100)	124	244	(112)	(3217)	(775)

59. **Profitability:** Domestic producers incurred a loss of 100 units during 2005-06. They overcame the losses and earned a profit of 124 units in 2006-07. Profits increased to 244 units during 2007-08. As a result of increased imports coming into the country at such significantly lower prices, domestic industry suffered a loss of 112 units during the first six months of FY 2008-09 which further increased to 3217 units as shown in the table above.
60. **Cash profit:** During 2005-06, the domestic industry earned cash profit of 100 units. It increased to 1564 units in 2006-07 and further to 2460 units in 2007-08. However, the domestic industry incurred a cash loss of 271 units during the first six months of 2008-09 and further cash loss of 5369 units during the first nine months of 2008-09.

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr to)	2008-09 (Oct to)	2008-09 (April to Dec)
Cash profit	Rs./PMT	*****	*****	*****	*****	*****	*****
Cash profit	Indexed	100	1,564	2,460	-271	-23927	-5,369

61. **Return on capital employed:** The domestic industry earned a negative ROCE of 2% during 2005-06. ROCE improved to 12% and 18% during 2006-07 and 2007-08 respectively. However, ROCE fell drastically to a negative 4% during first six months of FY 2008-09 and further to negative 8% during the first nine months of 2008-09.
62. In view of the above, it is held that the domestic industry has suffered serious injury during the first nine months of 2008-09.

F.6 Causes of serious injury:

63. In determination of causal link between imports and injury, the annex to the Safeguard Duty Rules requires that the Director general shall evaluate all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of the domestic industry, in particular, the rate and amount of the increase in imports of the article concerned in absolute and relative terms, the share of the domestic market taken by increased imports, change in the level of sales, production, productivity, capacity utilization, profits and losses, and employment.

64. Taking into account (a) rate and amount of increase in imports, and (b) the low prices and low landed value of imported PAN, and (c) the fact that the significant deterioration in production, capacity utilization, sales, market share, profit etc of the domestic industry occurred when imports increased, it is held that imports had caused serious injury to the domestic industry.

65. Some interested parties stated that there was no dramatic fall in the market share of the domestic industry vis-à-vis imports to conclude that increased imports have caused serious injury. As discussed above, domestic industry's market share decreased from 81% in 2005-06 to 76% during the first nine months of FY 2008-09 where as during the same period of time market share of imports increased from 19% to 24%. Accordingly, there was causal link between increased imports and the injury suffered by the domestic industry.

66. From the evaluation of all the factors as discussed under para 6, it has been held that there is casual link between increased imports and serious injury suffered by the domestic industry.

67. **Other factors causing injury at the same time:** Factors other than increase in imports that might be operating at the same time and causing injury to the domestic industry were examined. In this regard, particularly the following factors were examined:

a. **Deterioration in export performance of the domestic industry:** It has been contended by some parties that domestic industry has suffered loss on account of lower export sales and not due to increased imports. It is found that export volumes of the domestic industry have come down during the first nine months of 2008-09 as shown in the table below:

Year	Export Volume (MT)	Export Volume (Index)
2005-06	****	100
2006-07	****	112
2007-08	****	127
2008-09 (up to Dec 2008)	****	60
2008-09 Annualized	****	81

68. However, in the injury analysis, right from production onwards, impact of export activities have been excluded. While arriving at actual production, total production minus export sale has been considered as 'production for domestic market'. Other factors such

as domestic sales volumes, market share, domestic selling prices, profits, etc do not have any thing to do with export performance. Therefore, while conducting the injury analysis, adequate care has been taken to exclude the impact of export activities and hence, it is held that export performance was not a cause of injury to the domestic producers.

69. **Loss on account of recession:** Some parties have claimed that during the recession and global meltdown of 2008, petrochemical sector was worst affected. Many of the plants worldwide were closed. In this recessionary period, performance of petitioners with their 79% capacity utilization is superb and there is no relative injury to petitioners. In this connection, it is noted that 79% capacity utilization is the average of the year 2008-09. The injury in aggravated form has started after the economic crisis, which engulfed the world. The capacity utilization for the period October-December, 2008 has been 49%. This sudden loss of capacity utilization has been on account of increased imports, which happened at very low price at which it was not possible for domestic industries to sell without incurring irreparable loss. The international prices of PAN plummeted as evident from the table below:
70. The recession has caused increased imports at significantly lower price, which caused and threatened to cause serious injury.
71. Some interested parties have claimed that the plant shut down was a normal maintenance exercise and that shut down was not triggered by increased imports. Plant production records were examined and it was found that maintenance closure had never been as long as it had been between October 2008 to January 2009.

Company	Period of shut down	No of days
Thirumalai Chemicals Ltd.	From 07.10.2008 to 20.12.2008	74
SI Group	From 11th Oct '08 to 17th Nov'08 and 11th Dec to 28th Dec'08	54
MPCL	From 1st Nov'08 to 18th Jan'09	78
IGPL	One plant of annual capacity of 50000 MT from 25.10.08 to 10.11.08	16

The production restarted after issuance of preliminary determination.

72. IPMA stated that Thirumalai Chemicals Ltd vide their meeting notice dated 28.01.2009 has expressed its intention to adjust an amount of Rs. 18.27 crores from its investment made in one of its joint venture in Malaysia so that it can support the safeguard application in India. In response, Thirumalai Chemicals stated that the investment write off is to be funded from Capital Reserve Account, Amalgamation Reserve Account and Securities premium account as stated in the draft resolution attached to the meeting notice relied on by IPMA. Thirumalai Chemicals Ltd further stated that the adjustment would not have any impact on their profit/loss. I find that writing off investment made in a joint venture in Malaysia has nothing to do with the safeguard application made in India as this application is to redress the problems faced by them in the Indian market.
73. There were no other factors that caused injury to the domestic industry at the same time. Accordingly, it is held that the serious injury suffered by domestic industry has been caused by increased imports.
74. Threat of serious injury: Imports continue to increase till the end of December 2008. Considering the nature and severity of unforeseen developments that have caused the increase in imports and that the impact of those unforeseen developments still continue to be severe on the global as well as Indian market conditions, it is held that there is a real threat of serious injury to the domestic industry, if no protective measure is put in place.

G. PUBLIC INTEREST

75. Some of the parties have argued that imposition of safeguard duty would severely prejudice the public interest as a number of end user industries may close down. It has been argued that the imposition of safeguard duty on PAN would make it costlier and this would be against consumer interest. However, no evidence to this effect has been presented which could show the adverse effect of imposed safeguard duty. Further, it is observed that the expression 'public interest' does not cover consumer interest alone in its ambit. The expression 'public interest' is a wider term, which covers in its ambit the general social welfare taking into account the larger community interest. Safeguard duty, being an indirect tax may affect various economic operators differently as there exist conflicting interests of different economic operators in market economy.
76. An analysis of prevailing prices in India, international prices, raw material prices and cost of sale by domestic industries during the period January 2009-March 2009 has been considered. Further, the total production capacity by Indian industries and demand in India has also been analysed. During the period January 2009 – March 2009, there was an excess production capacity of 20,826 MT/month. This available excess capacity in India

can keep competition in domestic market alive. This shows the existence of domestic competition, which is preventing the domestic prices to rise to take full advantage of safeguard duty.

77. In the instant case, the raw material cost constitutes significant part of cost and the raw material prices are changing depending on international pricing. The difference between the selling price of PAN and the main raw material (OX) [called as Delta for reference] has been studied. It has been observed that the Delta has been between 67 units to 120 units. During the month of September, 2008 it became negative and has been in the range of 10 units to 15 units during October and November 2008. During the month of January to March 2009, it has been below 67 units but improved from the range of 10 to 15 units to the order of 56 to 64 units. It clearly indicates that the end user has been supplied the PAN at competitive prices.
78. The domestic industry has been maintaining the prices in line with changes in prices of raw material even after imposition of Safeguard Duty. There is no reason to believe that the domestic industry will change their pricing pattern.
79. Further, the safeguard duty of 25% has been only to the extent to neutralize the injurious impact and thus the competition from import remains alive. That the competition from import is continuing which is evident from the import figures during the month of January-April, 2009. Data for post imposition of the provisional safeguard duty is given below, which shows continued imports and fair trade.

PA imports into India as per IBIS reports				
	Jan-09	Feb-09	Mar-09	Apr-09
	in MT	in MT	in MT	in MT
KOREA REP	500	220	140	480
INDONESIA	120	--	--	--
ISRAEL	1793	431	--	835
TAIWAN	306	--	--	--
PAKISTAN	--	--	200	100
SINGAPORE	--	--	--	60
KOREA DEM	--	--	--	--
ITALY	--	--	--	105
CHINA	--	188	--	40
CANADA	--	--	--	400
JAPAN	--	--	--	75
THAILAND	60	--	--	--
IRAN	--	--	1725	2100
Total	2779	839	2065	4195

80. Moreover, if the injury to the domestic industry continued, it may lead to the closure of the domestic industry. As a result of which, 'PAN' an important chemical would not be manufactured in India and thereby making the users of the 'PAN' wholly dependent on the imports.
81. In view of the foregoing, it is held that the imposition of safeguard will be in public interest and especially the interests of end users are well protected.

H. PROVISIONAL MEASURES

82. In the preliminary findings, it was held that increased imports of PAN have caused and threatened to cause further serious injury to domestic producers of PAN. It was also observed that critical circumstances existed, where any delay in application for safeguard measures would cause irreparable damage to the industry. Considering the serious injury suffered by domestic industry during the first nine months of 2008-09 in a number of critical injury parameters as explained in the paragraphs above, it is held that in the absence of provisional measures, injury would have caused irreparable damage.
83. Considering the average cost of production of PAN by the domestic producers (Confidential), a reasonable return on capital employed, the level of import duties and the average import prices of PAN, safeguard duty at the rate of 25% ad valorem was recommended to be imposed on imports of PAN falling under 29173500 of the first Schedule of the Customs Tariff Act, 1975. Pursuant to the preliminary findings, Ministry of Finance, Government of India imposed the Safeguard duty at the rate of 25% ad-valorem on imports of PAN into India vide notification No. 9/2009 dated 29th January 2009.
84. With regard to the rate of duty, some interested parties had argued that production of PAN from OX is an exothermic reaction; excess steam/energy generated during the production process should be marketed or used for some other products; one tonne of OX produces 1.3 to tonne of PAN and there is 13% gain in the production of PAN which has not been considered while computing the cost of PAN, etc and that these factors had not been taken into account while arriving at the duty rate of 25%. While arriving at cost of production, actual cost has been considered and thus the calculation takes care of the submissions made by domestic industries.

I. ADJUSTMENT PLAN

85. The domestic industry have submitted restructuring plans indicating details of efforts being taken and planned to be taken to make a positive adjustment to improve their competitiveness.
86. The re-adjustment plan of the domestic industry to make adjustment to the import competition is very detailed and workable and not hypothetical. They have indentified the various areas where cost improvement could be achieved. The domestic producers have furnished essential details of cost saving schemes being pursued by them and the cost reduction likely to be achieved therefrom in response to the questionnaire in a confidential manner.
87. The domestic industry's readjustment plan primarily aims at reducing the conversion steps to the extent possible over a three year period. The domestic industry has proposed to take measures with respect to raw material cost, conversion cost, administrative, selling, finance etc to bring down their cost of production to improve their competitiveness over a period of 3 years.
88. The domestic industry has also agreed to submit action taken report in half yearly interval on adjustment plan for proper monitoring.

J. MISCELLANEOUS:

89. The government of Israel has contended that they have not been informed about the initiation of investigation. After examining the issue, it was found that the letter enclosing a copy of letter of initiation was sent to the Embassy of Israel through speed post on 6th January, 2009 and the letter has not yet returned undelivered. The representatives of M/s Gadiv Petrochemicals Ltd requested to become interested party on 12th February, 2009, much beyond the time limit of 21 days prescribed in the notice of initiation and the request was promptly accepted and all relevant documents were supplied to them in the interest of natural justice.
- Further, all relevant points made through representations have been considered in arriving at the recommendation even though at every place the contention mentioned in the representation could not be reproduced for sake of brevity.

K. DEVELOPING NATIONS:

90. The percentages of imports from developing nations have been examined. Except Pakistan, Indonesia and Thailand who constitute 5%, 14% and 4% respectively of total imports in India, other developing nations individually have less than 3% of total imports

in India. Therefore, the import of product under consideration originating from developing nations except Pakistan, Indonesia and Thailand may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

L. CONCLUSION AND RECOMMENDATION

91. In view of the findings above, it is concluded that increased imports of PAN into India have caused and threatened to cause serious injury to the domestic producers of PAN and it will be in the public interest to impose safeguard duty for a period of three years on imports of PAN into India. In arriving at the amount of safeguard duty that would be adequate to prevent serious injury to the domestic industry and to facilitate positive adjustment, weighted average cost of production has been taken into account for the period 2005-06 to Apr'08-Dec'08.
92. Considering that the domestic industry need 3 years for them to readjust, it is recommended that safeguard duty be imposed on imports of PAN into India for a period of three years at the rates specified below as under being the minimum necessary for the protection of the domestic industry from the serious injury threatened to be caused by the increased imports of PAN.

Year	Safeguard duty recommended	Period
First Year	25%	29.01.2009 to 28.01.2010
Second Year	20%	29.01.2010 to 28.01.2011
Third Year	15%	29.01.2011 to 28.01.2012

93. As the imports from developing nations except Pakistan, Indonesia and Thailand do not exceed 3% individually, the import of product under consideration originating from developing nations except Pakistan, Indonesia and Thailand may not attract Safeguard Duty in terms of proviso to Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

[F. No. D-22011/32/2008]

S. S. RANA, Director General